

खुश रहने के लिए मन को स्वच्छ एवं पवित्र बनाने की ज़रूरत

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। दीपावली विजय की खुशियां मनाने का त्योहार है। आज दीपावली सिर्फ एक यादगार बनकर रह गया है, किसी को भी इसके वास्तविक रहस्य का पता नहीं है। उक्त उद्गार ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में दीपावली के पावन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि बाहर के दीपक जलाना तो बहुत आसान है, लेकिन असली आवश्यकता तो हमें स्वयं के भीतर के दीपक को जगाने की है। दीपावली भी वास्तव में स्वयं के अंदर की बुराइयों को समाप्त कर आत्मा के दीपक को जगाने का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि हम एक दिन दीप जगाकर एवं आतिशबाजी करके खुश हो जाते हैं, लेकिन सदा ही कैसे खुश रहें, उसके लिए तो स्वयं को जगाने की ज़रूरत है। सदा खुश रहने के लिए



कार्यक्रम में केक कटिंग करते हुए दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. शुक्ला तथा अन्य।

हमें अपने मन को स्वच्छ एवं पवित्र बनाने की ज़रूरत है, क्योंकि मन ही है जो सुख और दुःख का अनुभव कराता है। उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान समय स्वयं परमात्मा इस कलियुगी दुनिया का परिवर्तन कर अब

पुनः सतयुग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं, उसके लिए वो हमारी आत्मा को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर रहे हैं। इसलिए आज इस दिवाली पर सभी ये संकल्प करें कि बाहर की सफाई के साथ-

साथ हम अपने मन की सफाई पर भी ध्यान देंगे और सबके प्रति शुभ-कामनायें रखेंगे।

ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दिवाली को सभी नये कपड़े पहनते हैं, अपने घरों की साफ सफाई करते हैं और कोई न कोई चीज़ अवश्य खरीदते हैं। इसका यही अभिप्राय है कि हम स्वयं को इतना स्वच्छ एवं पवित्र बनायें, जिससे कि हमारा जीवन स्वतः ही खुशनुमा बन जाए।

दादी रुकमणि, दादी कमलमणि एवं अन्य वरिष्ठ बहनों ने भी सबको दिवाली की शुभकामनायें प्रदान कीं। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां जैसे नृत्य, गीत एवं कविताओं के द्वारा भी सबका मनोरंजन किया गया। ओ.आर.सी. में दीपावली का यह पर्व बहुत ही श्रद्धा-भाव एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली एवं आस-पास के 1300 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

वर्तमान परिवेश में गीता ज्ञान की ज़रूरत



कार्यक्रम के दौरान मंचासीन ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. रानी, महंत, अरेराज तथा अन्य।

मुज़फ्फरपुर-बिहार। वर्तमान समय शक्तिहीनता का है। गीता का मुख्य उद्देश्य आत्मा का सशक्तिकरण है। गीता ग्रन्थ में स्पष्ट लिखा है कि मेरी प्राप्ति वेद अध्ययन, जप, तप, दान, पुण्य से नहीं होगी, सिर्फ मुझे याद करने से प्राप्ति होगी। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'गीता ज्ञान द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, दिल्ली ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय परमात्मा की निशानी गीता है तथा यादगार है शिव प्रतिमा। गीता में भगवान ने कहा है कि मैं जन्म-मरण में नहीं आता, मेरा अवतरण होता है और मैं अपना परिचय खुद देता हूँ। गीता में भगवान का रथ भी वर्णित है। उन्होंने दीपावली के उपहार में मुज़फ्फरपुर हाजीपुर मार्ग में रिट्रीट सेंटर 'शांति शक्ति सरोवर' निर्माण की घोषणा की, जो सम्पूर्ण बिहारवासियों के जीवन को सुख शांति से भरपूर करने वाला होगा।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा ने कहा कि महाभारत के पात्रों का चरित्र आज के समय स्पष्ट दिखाई दे रहा है, दुशाल, दुर्मुख, दुष्कर्ण आदि। वर्तमान समय का सम्बन्ध स्वार्थ पर आधारित है। उन्होंने कहा कि दुर्योधन ने धर्म और अधर्म मार्ग की जानकारी की बात कही थी, लेकिन उसने कहा कि धर्म-मार्ग पर मेरे लिए चलना असंभव है। उन्होंने आगे कहा कि महाभारत का युद्ध अहिंसक था लेकिन शास्त्रों में उसे उल्टा रूप दे दिया गया। आज पूरा हि-

वश्व विनाश के कगार पर है, आज की स्थिति कुरुक्षेत्र वाली है, ऐसे समय में मानव जाति को गीता ज्ञान की विशेष ज़रूरत है। वर्तमान समय दुर्गुणों का विनाश और सदगुणों को धारण करने का है।

डॉ. पुष्पा पाण्डेय, जबलपुर ने धर्म ग्लानि के लक्षण और चित्रों को बड़े ही स्पष्ट तरीके से लोगों के सामने रखा, जिसमें गाय द्वारा बछड़ी का दूध पीना, कन्या का मुख से वर मांगना, काम आधारित लाइलाज बीमारी उत्पन्न होना, माँ-बाप की अवहेलना करना, अध्यात्म के नाम पर दंगा करना, बड़े-बड़े नेता व धर्मगुरुओं का जेल जाना आदि हैं।

मंच का कुशल संचालन ब्रह्माकुमारीज की टाटा ज़ोन प्रभारी ब्र.कु. अंजु ने किया। ब्रह्माकुमारीज की बिहार प्रभारी ब्र.कु. रानी ने आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत शॉल ओढ़ाकर और गुलदस्ता देकर किया। इस अवसर पर अरेराज धाम के महंत का भी शॉल ओढ़ाकर अभिवादन किया गया। बहन बबिता रानी ने बड़े ही आकर्षक एवं ज्ञान रस में सराबोर कई गीत प्रस्तुत किये। हीरा लाल जी ने कविता सुनाई। ब्र.कु. मुकुट ने कॉमेन्ट्री द्वारा सहज राजयोग का अभ्यास कराया। ब्र.कु. राजनारायण ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम स्थल पर भव्य आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं बुक स्टॉल का भी आयोजन किया गया।

सत्कर्म को निजी जीवन से जोड़ें

नवसारी-गुज.। हमारे द्वारा किये गए छोटे-छोटे सत्कर्म ही हमारे जीवन में खुशियों के स्रोत होते हैं। स्थूल धन, वस्त्र और वस्तुओं को ज़रूरतमंद लोगों को देना ही वास्तविक सत्कर्म नहीं है, अपितु स्वयं को इस शरीर द्वारा कर्म कराने वाली आत्मा समझकर कर्म करने से हमारे साधारण कर्म भी मानवता के

लोग बदल जाते हैं, लेकिन सत्कर्म का शुभ परिणाम अवश्य ही फल देता है। उन्होंने आगे बताया कि देना ही लेना है। जो देंगे वो लौटकर आयेगा इसलिए दूसरों को सदा अच्छा ही दें, ताकि हमें भी जीवन में सदा अच्छा ही मिलता रहे। हम अपने मन की असीम शक्ति को दुआ देने, शुभकामना देने



कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रामप्रकाश, एम.बी. त्रिवेदी, ब्र.कु. गीता व अन्य।

लिए प्रेरक बन जाते हैं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में सत्कर्म महायोजना के प्रणेता ब्र.कु. रामप्रकाश ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि किसी उदास व्यक्ति को खुशी प्रदान करने से खुशी बढ़ जाती है, जैसे एक छोटा सा बीज समय आने पर बहुत बड़ा वटवृक्ष का स्वरूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार एक छोटा सा सत्कर्म, समय आने पर बहुत बड़े पुण्य में परिवर्तित होकर मीठा फल बन जाता है जिसे खाकर हम धन्य हो जाते हैं। हम सत्कर्म फल की आशा से न करें क्योंकि समय आने पर समस्या और

में लगा सकते हैं। अतिथि विशेष के रूप में उपस्थित एम.बी. त्रिवेदी ने बताया कि जिनदगी में आने वाली समस्या का सामना करके सत्कर्म की राह पर चलते रहने से हम सफल जीवन जी सकते हैं।

ब्र.कु. गीता,सेवाकेन्द्र संचालिका,नवसारी ने कहा कि कर्म में अपना अधिकार रखें, लेकिन फल की इच्छा नहीं रखें। वर्तमान में यदि हम दूसरों के सहयोगी बनकर श्रेष्ठ कर्म का खाता खोल देते हैं तो हम अपना भविष्य भी आनंददायी बना सकते हैं। हमारा दूसरों को दिया हुआ सहयोग हमें दुआ का पात्र बना देता है।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 5th Nov 2014

संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशंस जयपुर से मुद्रित।

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15

अंक-16

नवम्बर-II, 2014

पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00

जीवन को रोशन करता पर्व 'दीपावली'

शांतिवन। दीपराज परमात्मा की याद से सभी की आत्म-ज्योति जगे हुए दीपक समान चमक बिखेरती रहे, यही दिवाली पर्व पर ईश्वरीय वरदान है। हम सभी खुश रहें व सभी को खुशियां बांटते रहें, यही जीवन में आगे बढ़ने का साधन है। मिट्टी के दीये जलाने से तो बाह्य अंधकार दूर होता है लेकिन आत्मा का दीप जगाने से आंतरिक कालिमा दूर हो जाती है। दीपावली मन की मलिनता को मिटाकर मन को सुमन बनाने का पर्व है। आत्म-दीप जलाने से आत्मा दुःख-दरिद्रता से मुक्त हो जाती है।

उक्त विचार ब्रह्माकुमारी संस्था की अति.मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने डॉयमण्ड हॉल परिसर में देश-विदेश से दिवाली मनाने आए हजारों ब्रह्मा वत्सों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि खुशी का खजाना ही सर्वश्रेष्ठ खजाना है इसे संभालना है। कोई भी बात आपकी खुशी को दूर न ले जाये। आध्यात्मिक प्राप्तियों की राह में विभिन्न प्रकार के पेपर आते हैं लेकिन जो अच्छे पुरुषार्थी होते हैं वह सदा पास होते हैं। खुश रहने वाले ही आगे से



दीपावली पर्व पर दीप प्रज्वलित करते हुए दादी हृदयमोहिनी, दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. रमेश शाह तथा अन्य।

वाले हर पर्व से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को बल मिलता है। भारत एक समय अत्यधिक सुखी व सम्पन्न था कि जब हर घर में घी के दीप जलाए जाते थे। इस सम्पन्नता का कारण था कि उस समय के लोग सत्कर्म में स्थित थे, सतोगुणी स्वभाव वाले थे और उनका खाना-पीना तथा रहना-करना

स्थापना हो जाए। ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि परमपिता परमात्मा की याद द्वारा मन की सफाई, ज्ञानामृत द्वारा बुद्धि की शुद्धि और स्वयं को आत्मा निश्चय करने से ही स्वास्थ्य का लाभ होता है। यह वह समय है जब परमपिता परमात्मा स्वयं ज्ञान-

भी सफाई करने से श्री लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। कमल सदृश बन कर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

ब्र.कु.मोहिनी ने कहा कि अब आसुरी अवगुणों का पुराना खाता बंद कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें तभी जीवन में सच्ची सुख-शांति-समृद्धि का उजाला बिखरेगा।

ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशिका ब्र.कु.निर्मला दीदी ने कहा कि आत्म-ज्योति जगाने के लिए हमें आत्म-ज्ञान की आवश्यकता है। साथ-साथ इस बात की भी आवश्यकता है कि हम भौतिकता के दास न बनें। हम सभी आत्म-दीप में ज्ञान का घृत डालकर उसकी आत्म ज्योति को और अधिक उज्ज्वल बनाएं।

ब्र.कु.मुन्नी ने कहा कि जब तक सभी दीपक न जलें, दीपमाला नहीं बनती। दिवाली भी हमें यही संदेश देती है

कि सभी जगमगाते हुए आत्म-दीप बनकर एक माला में पिरो दिए जाएं।

मल्टी मीडिया के अध्यक्ष ब्र.कु.करुणा मिठाई खाने के साथ मुख को भी मिठा करे -कडुवा हो मुख तो मिठाई भी क्षणिक स्वाद ही देगी। मुख को



दीपावली कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए रशिया की बहनें।



डायमण्ड हॉल में सौ देशों से आये भाई-बहनों ने मिलकर मनाया दीपावली का पर्व।

आगे कदम बढ़ाते रहते हैं। परमात्मा प्यार व वरदानों से हमारी दिल भरपूर है क्योंकि हमारे दिल में एक परमात्मा की याद बसती है। किसी भी चीज में यदि मेरापन है तो वह सदैव याद रहती है अतः हम शिव बाबा को अपना बनाएं।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि ये भारत की प्राचीन संस्कृति का ही बड़प्पन है जो हर धर्म व जाति के लोगों को अपने में समाहित कर लेता है। यहाँ मनाए जाने

दैवी मर्यादा के अनुसार था। आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा उनकी आत्मा रूपी ज्योति जगी हुई थी इसलिए दुःख-अशांति का वहाँ नामोनिशान नहीं था। लेकिन आज जो गरीबी व अशांति छापी हुई है उसका कारण ही यह है कि आज मानव तमोगुणी हो गया है उसके कर्मों में गिरावट आ गई है। आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा मनुष्यों के मन रूपी मंदिर में उजाला किया जा सके, जिससे यहाँ पुनः शुक्ल पक्ष, सतयुग अथवा दैवी मर्यादा के स्वराज्य की

घृत द्वारा मनुष्यात्माओं की ज्योति जगा रहे हैं। हम सभी मनुष्य सत्य परमात्मा से सत्य ज्ञान लेकर अपने जीवन को पावन बनायें अर्थात् ज्योति जगायें और ईश्वरीय मिलन का वास्तविक सुख प्राप्त करें, तब ही यह संसार फिर से सतयुगी दुनिया में परिवर्तित होगा और श्री लक्ष्मी व श्री नारायण का फिर से राज्य होगा।

ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि बाह्य सफाई करने के साथ मन-मंदिर की

मीठा बना लें, तो जीवन ही मिठास से भर जाएगा। मिठाई खाते हुए मीठी वाणी बोलकर सभी को सुख देने का भी संकल्प करें।

न्यूयार्क से आई ब्र.कु.मोहिनी, लंदन से ब्र.कु.जयंती, जर्मनी से ब्र.कु.सुदेश, रशिया से ब्र.कु.सुधा व ब्र.कु.संतोष ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। सभी ने दीपराज परमात्मा शिव की याद से आत्म-दीप जगाकर बुराइयों व कमजोरियों से मुक्त होने का दृढ़ संकल्प लिया।

स्व की आहत, ना करो मुझे आहत...

एक महात्मा के पास बहुत से सेवक आते हैं, कोई कहता है कि मैं तीस साल से आदिवासी बच्चों की सेवा कर रहा हूँ, कुछ शिक्षा दे रहा हूँ, कोई कहता है कि मैं अस्पताल बनवा रहा हूँ आदि आदि। उनकी बात सुनकर महात्मा कहते हैं कि अभी-अभी एक महिला मेरे पास आई, कहती है कि मैंने तीस साल अपना पूरा जीवन सेवा में लगा दिया। तो मैंने उससे पूछा कि तुमने सेवा की वह ठीक, तुमने अपना जीवन लगाया वह भी ठीक, बाकि जिन बच्चों के लिए तुमने तीस साल जीवन लगाया उससे उनको कुछ लाभ हुआ या नुकसान हुआ? असली सवाल तो यह है कि उन बच्चों के जीवन में शांति बढ़ी कि घटी? सुख बढ़ा या घटा? वे कम आनंदित हुए या ज्यादा आनंदित हुए? तो ज़रा सोच में पड़ गई वो क्योंकि मैंने कहा कि आदिवासी बच्चों को पढ़ा लिखाकर ज्यादा से ज्यादा इतना ही करोगी कि हमारे बच्चे जैसे हैं उस तरह के हो जायेंगे, और क्या होगा? हमारे बच्चे कौन से स्वर्ग में हैं! इधर हम परेशान हैं अपने बच्चों से क्योंकि उनको पढ़ा-लिखा दिया है, अब वे यूनिवर्सिटीज़ जला रहे हैं, प्रिन्सीपल को पीट रहे हैं, वाइस चांसलर का घिराव करके पत्थर मार रहे हैं, कोई कोई तो छुरा दिखा रहे हैं। ये हमने किया उन्हें शिक्षा देकर। आप आदिवासी बच्चों के लिए बड़ी मेहनत कर रहे हैं, आप कह रही हो कि मैंने जीवन लगा दिया। अगर आप सफल हो गईं अपने काम में तो ये ही बच्चे यही काम करेंगे, और क्या करेंगे! कौन सा लाभ हुआ जा रहा है? लेकिन उसे लाभ से कोई मतलब नहीं है क्योंकि वो व्यस्त है, क्योंकि व्यस्त रहना एक तरकीब है बेचैनी से दूर रहने की। वो अच्छे काम में लगी है तो भीतर देखने का मौका नहीं आता, वह बहुत अशांत है, परेशान है, दमित है, सारे वेग रोग बन गये हैं भीतर, लेकिन उसने दूसरों की सेवा में अपने को उलझाया हुआ है। इस सेवा की व्यस्तता में उसे ख्याल भी नहीं आता कि मेरी भी कोई परेशानी है।



- ब्र. कु. गंगाधर

अक्सर लोग दूसरों की परेशानियों में उलझ जाते हैं, अपनी परेशानी भूलने के लिए। यदि उन्हें आप कहें कि पांच दिन की छुट्टी ले लो सेवा से तो....। क्योंकि पांच दिन में भी उन्हें अपनी परेशानियाँ दिखाई पड़नी शुरू हो जायेगी। आदमी स्वयं अपने आप से ही चालाकी करता रहता है। अपने आप से पलायन करने के भी बहुत रास्ते हैं, वह दूसरों में अपने को उलझाये रखने लगता है ताकि अपने से बच सके, अपना ख्याल ही न आये! भाग दौड़ में लगा रहता है, स्कूल खोलना है, आश्रम बनाना है, दिल्ली जाना है! वह महिला इसी काम में लगी है! चंदा इकट्ठा करना है, एक बस लानी है, यही लगा हुआ है, फुर्सत कहाँ है!

मैंने उससे पूछा कि तुम शांत हो? उसने कहा नहीं, शांत तो नहीं हूँ, आप कोई रास्ता बतायें। मैंने उसको कहा कि तुम आबू शिखर में आ जाओ, उसने कहा कि वह तो बहुत मुश्किल है, इस वक्त मुझे दिल्ली जाना है। किसलिए दिल्ली जाना है? एक अस्पताल खुलवाना है आदिवासियों के गांव में। मैंने उससे पूछा कि जहाँ अस्पताल है वहाँ ज्यादा लोग स्वस्थ हैं कि आदिवासी? जहाँ अस्पताल नहीं है, वहाँ ज्यादा लोग स्वस्थ हैं। पहले इसकी फिक्र कर लो, क्योंकि अस्पताल इलाज भी लाता है, बीमारियाँ भी लाता है। आदिवासी ज्यादा स्वस्थ हैं मगर उसको तो अस्पताल खोलना है! वह बोली कि यह बात तो ठीक है लेकिन अस्पताल के बिना ठीक नहीं है, अस्पताल तो ज़रूरी है, प्रगति होनी चाहिए। वह यह भी मानती है कि आदिवासी ज्यादा स्वस्थ हैं, लेकिन अस्पताल होना चाहिए! फिर किसलिए अस्पताल होना चाहिए? इससे तो ठीक सेवा यह होगी कि जहाँ अस्पताल है, वहाँ से अस्पताल मिटाओ और लोगों को आदिवासी बना दो, अगर स्वास्थ्य का ही रस है तो। अगर कोई और रस है, तो बात दूसरी है। लेकिन स्वास्थ्य तो आदिवासियों का ज्यादा अच्छा है। मगर वो बोली कि नहीं, आप जो कहते हैं वो ठीक है, अभी तो दिल्ली जाना ही पड़ेगा, फिर मैं किसी दूसरे मेडिटेशन की शिविर में आऊँगी।

उसका ध्यान, शांति में कोई रस नहीं है। अशांति को निकालने की तरकीब उसने आदिवासियों की सेवा बना ली है। कोई आदमी दुकान पर अपनी अशांति निकाल रहा है, पैसा कमाने में लगा है, उसे कोई मतलब नहीं है दूसरी बातों से, कोई राजनीति के चक्कर में लगा है, इलेक्शन जीतना है, मिनीस्ट्री में जाना है, उसे कोई मतलब नहीं है आत्मा से! कोई आदमी सेवा में लगा है, उसे भी कोई मतलब नहीं है आत्मा से।

लेकिन ध्यान रहे जो आदमी स्वयं को जाने बिना दूसरे -शेष पेज 9 पर...

परचिंतन, परदर्शन से परे स्वदर्शन चक्रधारी

बाबा चाहता है मेरे बच्चे मीठे मीठे मधुर बनें। अगर कोई कडुवा बोलता है और मैं उसे याद करती हूँ, तो मैं मीठी कैसे बनूँगी। एक मक्खी बीमारियों को भगाने वाली है, दूसरी मक्खी बीमारी फैलाने वाली है। बीमारी फैलाने वाली दो मक्खियाँ इकट्ठी नहीं रह सकतीं। मधुमक्खी इकट्ठी संगठन में रहती हैं तभी तो मधु देती हैं। हम भी मधुबन में रहते हैं। तो मधु जैसा मीठा बनना है।

तो मुझ आत्मा को क्या करना है! यह क्या करता, वह क्या करता... नहीं। वैरायटी ड्रामा है भिन्न-भिन्न सीन सामने आती हैं। ड्रामा में जो मुख्य एक्टर हैं वह दूसरे की एक्ट नहीं देखते हैं। भले पार्ट के लिए पति पत्नी बनेंगे, बहन भाई बनेंगे, लेकिन अन्दर रहता मैं तो एक्टर हूँ, अभिमान नहीं रख सकता। मैजोरिटी को अपमान की महसूसता होती है। कोई विरला होगा जिसे मान की इच्छा नहीं, अपमान की फीलिंग नहीं। एक है दबाना, दूसरा है समाना। थोड़ा भी अपमान हुआ उसे दबाया तो अन्दर से शान्ति गुम हो जायेगी। वही चिंतन चलता रहेगा। किसी से भी व्यवहार अच्छा नहीं होगा। अच्छे से भी अच्छा व्यवहार नहीं होगा। तो अपने को आवाज़ से परे जाना है ना! घर में जाना है ना! जब घर जाना कहती हूँ तो दीदी याद आती है।

दीदी का त्याग वण्डरफुल। तपस्या आँखों से देखी है, कभी कोई देहधारी की तरफ ज़रा भी लगाव झुकाव नहीं देखा। यह हमारे पूर्वज हैं। चन्द्रमणि दादी को याद करूँ या

शान्तामणि दादी को याद करूँ। बाबा हर एक को प्यार से देखता था। शान्तामणि के लिए कहा यह बहुत सच्ची है, सचली कौड़ी है। मैंने कहा मुझे भी सच्चा बनना है। दीदी ने कहा बाबा से तुम हंसकर मिलो ना! हमें लगता था यह भगवान है ना, उसे बाबा भी कैसे कहूँ! लेकिन अन्दर सच्चे पुरुषार्थी बाबा से सर्व संबंध का अनुभव करते हैं। पहले कहेंगे माँ है, फिर बाप, शिक्षक, सतगुरु, सखा, साथी बन जाता है। टीचर साक्षी होकर प्ले करना सिखाता है। सतगुरु श्रीमत देता है। जो श्रीमत देता है उस पर चलने की भी शक्ति देता है। मनमत नहीं चलती। तो यह चेक करना ज़रूरी है। हम बाबा से मिलने मधुबन में बैठे हैं, परचिंतन परदर्शन से परे हैं! जो दोनों से परे रहते हैं, वह स्वदर्शन चक्रधारी बनते हैं।

एक बाबा के बच्चे हैं, बहन भाई हैं। कुछ मुख्य बातें हमारे जीवन में प्रैक्टिकल हों, बाबा मम्मा ने ध्यान खिंचवाया है, बच्चे इस पढ़ाई की वैल्यु चाहिए। वैल्यु होगी तो पढ़ाई प्रैक्टिकल लाईफ में होगी, भगवान की पालना का कदर होगा। मुझे स्वयं भगवान ने अपना बनाया है, बचपन से लेकर आज तक उसकी पालना के नीचे रहे हैं। कभी अधीनता का संस्कार ही नहीं है। पालनहार इतनी पालना दे रहा है, भावना यह है, यह ईश्वर की पालना के अंदर आ जावे। तो देही-अभिमानी स्थिति बनेगी। मेरा मकान है, मेरा यह है... मेरा मेरा कुछ भी कोने में पड़ा होगा तो ईश्वर की पालना नहीं ले सकेगा। समझने वाली बातें हैं। यह बातें

धारण करने के लिए बुद्धि चाहिए। सच्चा पुरुषार्थी क्या करता है? बुद्धि अच्छी

रखता है। ज्ञान धारण करेंगे, बुद्धि से तब योग लगेगा, योग से विकर्म विनाश होंगे। अगर मेरे विकर्म विनाश हुए हैं, तो बीमारी अगर आयेगी भी तो थोड़ी सी कोई दवाई ली ठीक हो जायेगी। अगर महसूसता है कि मैं बीमार हूँ, तो यह भी कर्मभोग है।

जब कोई कहता है मुझे यह पता नहीं है, माना उसके पास एड्रेस नहीं है। अगर पता नहीं है तो ज़रूर धक्के खाता रहेगा, बुद्धि ठिकाने पर नहीं लगेगी। बाबा कहता है सिर्फ इसको पता बता दो। कहाँ जाना है! क्यों जाना है, क्या करने का है! कईयों की भाषा हो गई है बार बार कहेंगे पता नहीं, पता नहीं। आई डॉट नो। अरे बुद्धू है क्या! बाबा कहता था यह बुद्धू है, जो कहता आई डॉट नो। और कुछ बोलने आयेगा ही नहीं इसलिए बाबा कहता बच्चे बुद्धि को अच्छा बनाओ जो बाप को भी जान सको, खुद को भी जान सको। जो जानते हैं उनको अच्छा पहचानने की इच्छा होती है। प्राप्ति पहचानने के बाद होती है। देखा या जाना लेकिन पाया क्या! बाप से मैंने क्या पाया है?

पहले गीत बना था हमने देखा, हमने पाया... बाबा ने कहा इसे करेक्शन करो। देखा नहीं जाना, हमने जाना, हमने पाया शिव भोला भगवान। है भोला परन्तु भोला कह करके अपना बनाकर हमको कहता, देखो मैं कौन हूँ!



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका



दादी हृदयमोहिनी अति. मुख्य प्रशासिका

ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप 'खुशी' आज भी और कल भी

टीचर माना ही अपने फीचर्स द्वारा फ्यूचर दिखाने वाली। टीचर्स अपनी सूरत और कर्तव्य द्वारा प्रत्यक्ष करती हैं कि हमारा राज्य आया कि आया, जिसे दुनिया वाले चाहते हैं। आप और हमें देख लोग यही कहते हैं कि ये न्यारे और निराले हैं। टीचर्स हर एक समझती हैं कि बाबा मेरा है। जिससे प्यार होता है उसकी विशेषता ज़रूर धारण होती है। हम सभी ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के गुण, लक्षण और विशेषता धारण कर भविष्य का नक्शा तैयार कर रहे हैं। तो हम सभी बाबा के दर्पण हैं। बाबा क्या है? किसका है? यह हमारे चेहरे और चलन से दिखाई दे। बाबा ने हमें ऐसा तैयार किया है कि हमें बाबा और भविष्य ही दिखाई देता है। हमें अपने ईश्वरीय बचपन को देख वण्डर लगता है और हमें देख सभी को लगता है कि इनकी जीवन खुशमिजाज है। हम अमृतवेले से लेकर खुशी की खुराक खाते हैं। लोग तो तन्दरूस्त रहने के लिए घी खाते हैं और हम खुशी की खुराक खाते हैं। हम टीचर्स कितनी भाग्यशाली हैं। हाय-हाय के गीत

भूल गये, वह स्वप्न में भी नहीं आता। हमारे दिल में वाह बाबा वाह! यही हमारा जीवन है। बाबा और सेवा में ही सारा दिन चला जाता है। जब से बाबा के बने, हमारी जीवन अलौकिक हो गई। हम सब बाबा के बच्चे स्वर्ग में जाने के लिए स्वयं को सजा रहे हैं। भविष्य में इस ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप खुशी होगी, अभी भी है और सदा रहेगी। संगम पर हमारी कितनी महत्व वाली जीवन है। हमें देख दुनिया वाले कहते हैं वाह ब्रह्माकुमारी वाह! दुनिया वाले मैजोरिटी समझते हैं कि ब्रह्माकुमारी जीवन कम नहीं, हम तो अनुभव करते हैं। तो हमारी सदा वाह वाह! रहे, कभी कभी नहीं। बाबा हमारे साथ हैं। मुख से बाबा बाबा निकलता है। वाह वाह! है, व्हाय तो नहीं निकलता? जैसी हमारी जीवन है, दुनिया में किसी की नहीं होगी। जैसा बाबा ने हमें बनाया है, ऐसा हमें सबको बनाना है, यही हमारी ड्युटी है। खुशी हरेक को देनी है चाहे किसी भी जात व धर्म का हो। सदा बाबा हमारे साथ है। कुछ भी होता है तो हम कहते - बाबा। बाबा भी कहते बच्ची क्या हुआ। बाबा हमें कमल का फूल बनाते हैं न्यारा और प्यारा। और फूल तो पानी में खराब भी हो जाते लेकिन कमल सदा ऊपर रहता है। हमारी

जीवन भी ऐसी बन गई है। हम सहजयोगी हैं या मेहनत करते हैं? अगर कोई बात हो भी जाती है तो बाबा को दे दो, बाबा लेने वाला बैठा है। दिल से, प्यार से, बाबा कहते हो तो वह रक्षक तो होगा ना। बाबा के सिवाए कोई भी याद न आए। कोई भी बात बाबा को याद करने से खत्म हो जाती है, सब अनुभव हैं। मेरा बाबा कह मेरेपन का अनुभव करो। बाबा के ऊपर सबका हक है। बाबा के लिये सब परसनल हैं, कोई भी साधारण नहीं। जो अपने को साधारण समझते हैं उनका भी बाबा के दिल में बहुत मूल्य है। संगम पर बाबा ने हमें इतनी खुशी दी है जो सतयुग में भी नहीं होगी। अभी थोड़ा समय है युग बदलने में। जब हम सतयुग में मिलेंगे तो मौज ही मौज होगी, ऐसी लाईफ का बीज अभी बो रहे हैं। बात कैसी भी हो, हम सन्तुष्ट तो सब सन्तुष्ट हो जाते हैं। कितना भी नुकसान हो जाये, हमें ज्ञान से परिवर्तन कर दौड़ लगानी है। बाबा को बच्चों से प्यार है, समझते हैं कल ठीक हो ही जाना है। हमें भी निश्चय है कि वह ठीक कर देगा। अगर ठीक नहीं होता तो इतना समय यज्ञ में नहीं रहते। बातें तो आयेगी लेकिन बातें इतनी ताकतवर न हों जो मेरी खुशी ले जायें।

गतांक से आगे ...

भगवान से हमारी मित्रता, पवित्रता पर आधारित है

मित्रता अर्थात् दो सच्चे दिलों का मिलन। अगर एक मित्र सच्चा न हो, धोखा देता हो तो मित्रता समाप्त हो जाती है। हमारी ईश्वर से मित्रता की नींव पवित्रता ही है और हमारी यह मित्रता तब ही स्थाई होती है जब

हम उसमें पूर्ण वफादार हों। हम यदि गुह्यता से विचार करें तो एक भी अपवित्र संकल्प उठाना अपने उस

परम मित्र को धोखा देना है और तब यह मित्रता निःसंदेह ही टूट जाएगी और हम उसके स्नेह और सहयोग से वंचित हो जायेंगे। अन्यथा तो वह परममित्र सर्वथा ही हमारा साथ निभाता है।

पवित्रता की शक्ति का सदुपयोग करें

ब्रह्मचर्य का असीम बल हमारे शरीर में संचित होता रहता है, परन्तु पतित तत्वों से बना हुआ यह शरीर उस शक्ति को अपने में समा नहीं सकता। जबकि सतयुग में वह शक्ति पावन तत्वों में विलीन होती रहती है और देवों के जीवन को दिव्य बनाये रखती है। अतः अब यदि हम उस शक्ति का रूपांतरिकरण कर पाते हैं तो पुनः उस स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

जब वैज्ञानिकों ने यह सिद्धान्त खोज निकाला कि पदार्थ को ऊर्जा में बदला जा सकता है तो उससे संहारक यन्त्रों का निर्माण हुआ। पहले यह ही मान्यता थी कि पदार्थ, पदार्थ ही रहेगा, उसे ऊर्जा में नहीं बदला जा सकता। इसी प्रकार योगाभ्यास द्वारा ब्रह्मचर्य से संचित इस शक्ति को उर्ध्वगामी करके सूक्ष्म ऊर्जा में बदल दिया जाता है और फिर वह सूक्ष्म ऊर्जा हमारे मस्तिष्क को बहुत दिव्य व शक्तिशाली बना देती है, क्योंकि जब हम अपने मन बुद्धि को परमधाम में परमपिता के स्वरूप पर एकाग्र करते हैं तो हमारी सभी नस-नाड़ियों का खिंचाव भी ऊपर की ओर हो जाता है और शक्ति उर्ध्वगामी हो जाती है।

दूसरा, पवित्रता की शक्ति का उपयोग मनन-चिन्तन में भी होता है। अतः पवित्रता के अभ्यासी को मनन पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए।

कैसे हों नववर्ष... -वेज 8 का शेष क्वालिटी पर हम ध्यान नहीं दे पाते। जिससे हम अपने विचारों को शक्तिशाली व उपयोगी नहीं बना पाते। ऐसे सोच/संकल्पों रूपी खजाने का हम सही उपयोग करने की जगह उसे व्यर्थ गँवा देते हैं। एकाग्रता और सकारात्मकता के साथ जब हम संकल्प करेंगे तभी हमारे संकल्प शक्तिशाली होंगे और हमारे सभी कार्य सहज ही सफलता को प्राप्त हो जाएंगे। प्रायः असफलता तब प्राप्त होती है जब हम अपने संकल्पों-विकल्पों पर अटेंशन न देकर अपने निर्धारित लक्ष्य से भटक जाते हैं। ऐसे समय में हमारा मन एकाग्रचित्त न होकर किसी

इससे शक्ति का रूपांतरिकरण भी हो जायेगा और फलस्वरूप उस शक्ति की अधिकता से उत्पन्न व्यर्थ संकल्पों से भी मुक्ति मिल जायेगी। तो मनन में भी उस शक्ति का उपयोग होता है और यही कारण है कि चिन्तक मनुष्य कभी मोटे नहीं होते।

उस शक्ति के उपयोग का तीसरा साधन है - परिश्रम। जैसे सर्वविदित है कि खेत में काम

करने वाला बैल भी ब्रह्मचारी है। उसकी शक्तियों का प्रयोग परिश्रम में हो जाता है। जबकि साँढ़ विकारी है परन्तु मोटा ताजा होता है, क्योंकि स्वच्छ है। अतः उस शक्ति को प्रयोग करने हेतु सच्चे योगियों को शारीरिक काम से जी नहीं चुराना चाहिए।

ब्रह्मचर्य का असीम बल हमारे शरीर में संचित होता रहता है। परन्तु पतित तत्वों से बना हुआ यह शरीर उस शक्ति को अपने में समा नहीं सकता। जबकि सतयुग में वह शक्ति पावन तत्वों में विलीन होती रहती है और देवों के जीवन को दिव्य बनाये रखती है। अतः अब यदि हम उस शक्ति का रूपांतरिकरण कर पाते हैं तो पुनः उस स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार इस शक्ति का उपयोग करने से वह हमारे मन को प्रज्वलित नहीं करेगी। पवित्र आत्मा को अन्तर्मुखी होना चाहिए।

एक समझदार व्यक्ति या शक्तियों व ईश्वरीय खजानों से भरपूर आत्मा अवश्य ही अन्तर्मुखी होती है। अगर कोई पवित्र रहने वाली आत्मा बाह्यमुखी हो, वाचा रस में तल्लीन रहती हो तो भला उसकी पवित्रता में विश्वास भी कौन करेगा! यदि कामाग्नि को योगाग्नि में बदलने में, कोई आत्मा असमर्थ रहती है तो उसका प्रगटीकरण बाह्यमुखता, क्रोधाग्नि, ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि या चिड़चिड़ेपन

विषय, वस्तु या व्यक्ति में फँसकर भटक जाता है। अतः नववर्ष में अपने संकल्पों को शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बनाने हेतु हमें अपने सोचने की शक्ति को दूसरों का कल्याण करने हेतु तथा सदा निमित्त भाव में रहकर कार्य करने में लगाना चाहिए।

ध्यान व योग की लें मदद - ध्यान व योग का जीवन में प्रयोग करके हम अपनी संकल्प-शक्ति को शुभ, कल्याणकारी तथा श्रेष्ठ बना सकते हैं। योग द्वारा स्वयं का सम्पूर्ण स्नेह परमपिता परमेश्वर शिव से जोड़ लें तो हमारी बुद्धि और संकल्प सात्विक व शुभ भावना से सजे-धजे बन जाएँगे। ध्यान-योग के निरंतर

की अग्नि के रूप में होता है जबकि पवित्रता चित्त को शीतल कर के मन में सुखदायी शुभ-भावना को जन्म देती है।

ईश्वरीय पथ पर अपवित्रता

महा-महा पाप है

यदि किसी किसान ने रेगिस्तान में एक सुंदर बगीचा बनाया हो, कठिन परिश्रम से उसमें सुंदर सुंदर खुशबूदार फूल उगाये हों जिससे

सम्पूर्ण क्षेत्र महक उठा हो और कोई दुराचारी उस बगीचे को नष्ट करने लगे, फूलों को झुलसाने लगे तो उस किसान पर क्या बीतेगी और यह कितना बड़ा पाप होगा!

इसी प्रकार परमपिता, जो कि एक अद्भुत बागवान भी है, इस कलियुगी मरुस्थल में रूहों को पवित्र बना रहे हैं। कितने वर्षों से और बड़ी ही दिव्य मेहनत से वे पवित्र सृष्टि के निर्माण का कार्य कर रहे हैं, एक दिन ऐसा आयेगा जब पवित्र रूहों रूपी पुष्पों से सम्पूर्ण जगत महक उठेगा, और यदि कोई मनुष्य उन पवित्र फूलों की ओर बुरी नज़र डाले, उनकी सुगन्धि को नष्ट करना चाहे तो उसका यह कितना भयंकर दुष्कर्म होगा? क्या वे आत्माएं उनके परम प्यार की अधिकारी होंगी?

हमें इस प्रकार चिन्तन करना चाहिए कि इन चेतन फूलों को स्वयं परमपिता ने सुगन्धित बनाया है। हम इनकी सुगन्धि में दुर्गन्ध न मिलायें, अन्यथा यह महापाप होगा। किसी पवित्र आत्मा के लिए एक भी अपवित्र संकल्प उठाना महापाप है। जैसे यदि कोई मनुष्य श्री लक्ष्मी या सरस्वती देवी के मन्दिर में जाकर उन्हें कुदृष्टि से देखे, तो उसे कितना बड़ा पापी कहेंगे। तो यह महापाप की स्मृति भी आत्मा को इस पाप से मुक्त कर देगी।

इस प्रकार प्रतिदिन चिन्तन करते हुए हमें यह देखना होगा कि हमारा हर कदम, हर संकल्प हमें हमारी सम्पूर्ण पवित्रता की ओर ले चले। हमारा रास्ता लम्बा अवश्य है परन्तु सुखदायी है और हमारा परममित्र हमारे मन को बहलाने के लिए सदा साथ है। अतः यदि इसमें कोई छोटी गलती या स्वप्न में भी गलती हो जाती है तो जीवन में निराशा के बीज नहीं बोने चाहिए बल्कि बहुत ही धैर्यता व दृढ़ता के साथ अपने लक्ष्य की ओर दौड़ना चाहिए।

अभ्यास से आत्म-ज्योत जग जाती है और कर्मन्द्रियों पर मन का नियंत्रण होने लगता है जिससे मन में उठने वाले सूक्ष्म संकल्पों की भी हम चेकिंग कर सकारात्मक संकल्पों को कार्य में ला सकते हैं। पुरुषार्थ या योग (ईश्वर को याद करने) से हमारे संकल्पों/सोच में परिवर्तन आता है। संकल्प से फिर कर्मों में और कर्मों में बदलाव आने से फिर से संस्कारों में फेर-बदल होता है। अतः योगी तू आत्मा बनकर अपनी संकल्प शक्ति को सही दिशा दीजिए जिससे स्वयं के तथा विश्व के कल्याण/परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए नए साल में।



पोखरा-नेपाल। ब्र.कु. परिणीता को मामेन्टो देकर सम्मानित करते हुए विन्ध्यवासिनी धार्मिक क्षेत्र विकास समिति के अध्यक्ष गणेश बहादुर श्रेष्ठ एवं उपाध्यक्ष योगेन्द्र प्रधान।



रायकोट-लुधियाना। एस.एम.ओ. पी.एस. सुखमिंदर सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवीण तथा अन्य।



गायघाट-बिहार। बिहार विधानसभा प्रतिपक्ष के नेता नंदकिशोर यादव को चैतन्य दुर्गा की झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. खुशबू तथा अन्य।



हाजीपुर-बिहार। चैतन्य दुर्गा की झाँकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए नगर निगम के चेयरमैन मोहम्मद हैदर अली, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।



देवघर-वैधनाथ। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् सभी प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बंधुओं के साथ ब्र.कु. रीता, ब्र.कु. मोहिणी एवं ब्र.कु. रेखा।



दिल्ली-न्यू फ्रेन्ड्स कॉलोनी। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.सुजाता, ब्र.कु.संध्या, डॉ. अरूणा तथा अन्य।



तृतीय श्रृंखला में आपने अध्ययन किया कि किस तरह से अग्नि तत्व को ठीक कर डायबिटीज़ जैसी बड़ी बीमारियों से बचा जा सकता है। अब हम शरीर के चौथे तत्व वायु तत्व के साथ आपको जोड़ते हैं। वायु तत्व से हमारे शरीर का श्वसन तंत्र, हृदय तंत्र आदि निर्मित है। हमारे हृदय में खून का संचार का रुकना, हार्ट ब्लॉक होना या फेफड़ों का ठीक से काम नहीं करना, दिल का दौरा पड़ना आदि घटनाएं आम हो चुकी हैं। आपने देखा होगा कि तीन तरह के त्रिदोष माने जाते हैं जिसे प्रायः वात, पित्त, कफ से जोड़ा जाता है। वात का अर्थ वायु होता है, आयुर्वेद कहता है कि वायु तत्व की अधिकता से जोड़ों आदि में बहुत दर्द होता है और जब इसकी पराकाष्ठा होती है तो व्यक्ति चल भी नहीं पाता। इसके

अलावा वायु तत्व हमारे फेफड़ों व खून के दौरों को भी प्रभावित करता है। पम्पिंग के लिए वायु नियमित अंतराल पर मिलनी चाहिए। परंतु आज इसका अभाव है। वायु तत्व के खराब होने का प्रमुख कारण लोभ है। आप ऐसे ही देखो

सावधान! कहीं सोच ही शत्रु तो नहीं?

कि पेड़ों की कटाई की जाती है जो कि ऑक्सीजन प्राप्त करने का सबसे बड़ा स्रोत है। आज लोगों की लोभ वृत्ति इतनी बढ़ गई कि उन्हें वातावरण के संतुलन का बिल्कुल ध्यान नहीं रहता है। लोभ की वृत्ति इस हद तक है कि लोग मकान आदि बनाने के लिए भी अपने सामने लगे पेड़ों को कटवा देते हैं। कहते भी हैं कि दिल को प्यार की जरूरत होती है, तो आज हमारे दिल से प्यार कहीं गायब हो चुका है। प्यार की कमी का कारण स्वार्थ या लोभ है जो हमें इन बीमारियों को न्योता देने में

मदद करता है। जब तक हम सबसे प्रेम नहीं करेंगे तब तक हमारी ये बीमारियां ठीक नहीं होंगी। प्रेम का रंग हरा होता है, इसलिए मुस्लिम लोग हरी चुनरी चढ़ाते हैं जो प्रेम का प्रतीक है। मंदर टेरेंसा इसका जीवन्त उदाहरण हैं

जिन्होंने लोगों को प्रेम दिया और उससे उनको बहुत खुशी भी मिलती थी, और कभी भी इन बीमारियों की चपेट में नहीं आईं। तो प्रेम करिये और दिल के दौरे से बचिए।

आकाश तत्व का संबंध हमारे कम्प्युनिकेशन से भी संबंधित है जो हमें अच्छे वक्ता के रूप में स्थापित कर सकता है। जिसका आकाश तत्व कमजोर है अर्थात् जो सबको स्पेस नहीं देते या जगह नहीं देते उनकी बातचीत प्रभावशाली नहीं होती। आकाश तत्व का मतलब है जो खुला हुआ हो अर्थात् जिसमें सबको समा लिया जाए। आकाश तत्व के खराब होने का प्रमुख कारण है ईगो। ईगो अर्थात् अभिमान, कि मैं बड़ा हूँ या मैं इस पद पर हूँ। इससे आपने किसी को भी जीवन में स्पेस यानी जगह नहीं दी और यदि उन्होंने आपकी बात नहीं सुनी तो आप हर्ट हो गये। यदि उन्होंने आपका सम्मान किया जिनके साथ आप रहते हैं तो आपको अभिमान आ गया कि मेरी तो सभी सुनते हैं और नहीं किया तो अपमान आ गया, ये भी ईगो है ना मानने का। जिसका भी आँख, कान और गला हमेशा खराब रहता है वे इसी तरह के

व्यक्तित्व वाले हैं, या तो हर्ट होते रहते हैं या करते रहते हैं, या अभिमान या फिर अपमान। इसलिए आप देखते हैं कि आकाश का रंग नीला होता है और नीला रंग विस्तार को इंगित करता है। आज हमारे अंदर विस्तार नहीं है, सबकुछ समाने का जज़्बा नहीं है, कारण कि ईगो आ गया, अभिमान आ गया। तो इसको खत्म करने के लिए गहरी शांति की आवश्यकता है। जब भी मन शांत होगा तो आप कोई भी कार्य करने से पहले कई बार सोचेंगे और उस व्यक्ति से अपनी तुलना नहीं करेंगे। तुलना ही तौलना है। अगर आपने तुलना की तो अभिमान या अपमान फील होगा। सबसे पहले हमारे मन में इन गुणों का जैसे शक्ति, पवित्रता, सुख या खुशी, प्रेम आदि का समावेश होगा तो उपरोक्त सभी बीमारियों से निजात स्वतः मिल जाएगी। हमारा तन और मन दोनों सम्पूर्ण रीति से निरोगी हो जाएंगे।

-ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service

"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services

Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service

Android | Blackberry | iPhone | iPad |
Tablet | Visit: <http://pmtv.in>

Mobile Audio Service

Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day
अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालू करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना-ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा साॅफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-

Email- mediabkm@gmail.com

M-8107119445

प्रश्न:- अमृतवेलो मुझे दस-पन्द्रह मिनट मेंडिटेशन करने के बाद नींद आने लगती है, परन्तु मैं इस समय को पावरफुल करना चाहता हूँ। मैं बाबा से वरदान लेना चाहता हूँ...मुझे योग के प्रयोग बताइये। खुद की प्रकृति व बाहर की प्रकृति को योग दान कैसे करें?

उत्तर:- नींद से उठकर आप कम से कम दूध बुश अवश्य करें, हाथ, पैर, मुख भी धो लें ताकि नींद का प्रभाव खत्म हो जाए, यदि सम्भव हो तो स्नान कर लें। सवेरे योगाभ्यास यदि कॉमेन्ट्री से लिया जाए तो नींद नहीं आयेगी। चाहे स्वयं को स्वयं कॉमेन्ट्री दें या कैसेट सुनते हुए करें। मन को शून्य करने का ख्याल न करें और प्रति पांच मिनट एक नया अभ्यास करें। हमने योग की अनेक ड्रिल कई बार बताई है। इससे मन को नया नया अभ्यास मिलने से नींद नहीं आयेगी। चारपाई पर न बैठें।

देह रूपी प्रकृति को योग-दान इस तरह दें। मैं आत्मा भृकुटी सिंहासन पर हूँ, मैं परम पवित्र हूँ, मुझसे पवित्रता की सफेद किरणें सारे शरीर में फैल रही हैं। इसके बाद अभ्यास करें...मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मुझसे शक्तियों की लाल किरणें सारे शरीर में फैल रही हैं...

सम्पूर्ण प्रकृति को योगदान इस तरह करें... मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ...बाबा से पवित्रता की सफेद किरणें मुझ पर पड़ रही हैं व मुझसे चारों ओर फैलकर प्रकृति में समा रही हैं...ऐसे भी कर सकते हैं कि मेरे सामने प्रकृति के पांचों तत्व देव स्वरूप में खड़े हैं, ये पवित्र किरणें उन पर पड़ रही हैं।

प्रश्न:- मुझे योग में अतीन्द्रिय सुख का ही हमेशा अनुभव होता है, क्या यह ठीक है या भिन्न-भिन्न अनुभव होने चाहिए। मेरे युगल मुझे पवित्रता में सहयोग देना चाहते हैं परन्तु कर नहीं पाते, उन्हें बाबा में भावना भी बहुत है, मैं उनके लिए क्या करूँ?

उत्तर:- अतीन्द्रिय सुख का अनुभव सर्वश्रेष्ठ है, इसके बाद अन्य किसी अनुभव की आवश्यकता नहीं रहती। भोजन बनाते हुए, भोजन को दृष्टि देते हुए इक्कीस बार इस स्वमान को याद करें कि मैं परम पवित्रात्मा हूँ। दूध चाय तैयार करते भी सात बार यही अभ्यास करें, इससे आपके युगल में भी पवित्रता की शक्ति आ जाएगी।

प्रश्न:- मैं दो बच्चों की माता हूँ, तीन वर्ष से ज्ञान में

हूँ। मेरे पति ने 42 वर्ष की आयु में सड़क दुर्घटना में देह छोड़ दिया। मेरे जीवन में दुःख के पहाड़ गिर गये। उसी दौरान मुझे ज्ञान मिला, कुछ शान्ति मिली परन्तु मैं चाहती हूँ कि बाबा इस ड्रामा को रिपीट न करें, मैं इसे बदलना चाहती हूँ। मैं ऐसे क्या कर्म करूँ जो वही आत्मा फिर पति रूप में मुझे मिले।

उत्तर:- कौन किसका पति व कौन किसकी पत्नी...आप इन क्षणिक नातों में क्यों भटक गई बहन...परम प्रियतम परम आत्मा को अपना सच्चा पति बना लो...आपका सुहाग कायम रहेगा। आपने पूर्व जन्मों में परमात्म मिलन की बहुत कामना की थी, आप इसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर थीं। परन्तु अब जब परमात्म मिलन का समय



मन की बातें
-ब्र.कु. सूर्य

आया तो आप देहधारियों के प्यार में अटकी हुई थीं। यदि वह

घटना न होती तो प्रभु मिलन भी न होता। मृत्यु पर परमात्मा का भी अधिकार नहीं, वह अटल व पूर्व निश्चित है। अब आपके पास दो रत्न हैं, बच्चे हैं, प्यार से उनकी पालना करो। अगले कल्प में यदि आप अतिशय पुण्य करेंगे, तो ऐसी घटनाएं नहीं होंगी। अब आप यह चिन्तन करो कि इस जीवन को ईश्वरीय सुखों से कैसे भरें क्योंकि उस आत्मा ने तो पुनर्जन्म ले लिया है, अब वह आपको नहीं पहचानेगी।

प्रश्न:- ज्ञान में अमीर बनने की विधि क्या है? भगवान तो मिला परन्तु धन भी तो चाहिए, इच्छाओं के लिए नहीं, परन्तु आवश्यकता पूर्ति के लिए।

उत्तर:- भगवानुवाच - 'जिसके पास ज्ञान-धन बहुत है, उसे स्थूल धन कमाने में मेहनत नहीं लगती।' इसलिए ज्ञान-धन बढ़ाओ व उसका दान करो। दूसरी बात -अपने थोड़े से धन का भी कुछ हिस्सा सच्चे दिल से ईश्वरीय सेवा में लगाओ, इससे धन की वृद्धि होगी।

दो स्वमान लिख रहे हैं- सारा दिन इनका अभ्यास करें। प्रथम - मैं प्रकृति का मालिक हूँ तथा दूसरा - मैं मास्टर भाग्य विधाता हूँ। अवश्य आपको पर्याप्त धन प्राप्त होगा।

प्रश्न:- सेवा के नम्बर किस आधार पर मिलेंगे। देखने में आता है कि धन की सेवा करने वालों का ही ज्यादा महत्व है। हम ये जानना चाहते हैं कि भगवान के पास किसका महत्व है?

उत्तर:- आपने सुंदर व गुह्य प्रश्न पूछा है। रूद्र ज्ञान यज्ञ रचकर भगवान ने ब्राह्मणों को सौंप दिया है। सभी तन, मन, धन से इस महान यज्ञ को सफल बनाने में लगे हैं। यद्यपि भगवान को किसी के धन की आवश्यकता नहीं है, वह तो हमारे कल्याण के लिए हमारा अल्प धन स्वीकार करता है। जो ब्रह्मा वत्स सच्चे दिल से, निःस्वार्थ भाव से व गुप्त रूप से न कि दिखावे के लिए, धन की सेवा करते हैं उनका अत्यधिक पुण्य जमा होता है। गरीब के दस रुपये व साहूकार के सौ रुपये बराबर फल देते हैं।

आपने पूछा कि भगवान के पास किनका महत्व है। यों तो वे सभी को प्यार करते हैं परन्तु ज्ञानी आत्मा, योग-युक्त आत्मा, पवित्र आत्मा उन्हें अति प्रिय हैं। उनके पास सबसे ज्यादा महत्व उनका ही है जो सच्चे हैं, जो निर्मल व निरहंकारी हैं, जो रहम दिल हैं व दूसरों को सुख देते हैं, जो दयावान हैं व सभी में समभाव, आत्मिक प्रेम व शुभभावना रखते हैं। जो हिंसक हैं, क्रोधी हैं, कामी हैं, लोभी हैं - उनकी तरफ तो वे देखते भी नहीं।

प्रश्न:- आदि मानव कौन थे -क्या वे असभ्य थे, वे कब थे, इस बारे में ईश्वरीय ज्ञान क्या कहता है?

उत्तर:- आदि मानव तो देवता थे, वे सम्पूर्ण रूप से सभ्य थे। उनकी ही चहुँ ओर पूजा हो रही है। वे न तो बंदर स्वरूप में थे और न ही जंगली थे। ये सभी सतयुग आदि में थे। परमात्मा ने नूतन सृष्टि रचकर मनुष्य को देव रूप में रचा था। शनैः शनैः दो युग में उनका देवत्व क्षीण हुआ। तत्पश्चात् त्रेता अंत में एक भयानक विनाश हुआ। ये विनाश हुआ प्रकृति प्रकोपों के द्वारा और इसका कारण बना - देवताओं का वाम मार्ग में चले जाना। इस विनाश में देवगण अलग-अलग खण्डों में बँट गये, उनका आपसी सम्बन्ध टूट गया। इनमें से ही कुछ दूर जंगलों में अकेले पड़ गये। सौ दो सौ वर्ष बाद इनका ही रूप असभ्य हो गया। इतिहासकारों ने इनका ही वर्णन किया है। उन्हें देव संस्कृति का ज्ञान नहीं रहा।

क्या हम स्वस्थ हैं? इस प्रश्न का उत्तर किसी दूसरे से पूछने के बजाय अपने आप से ही इसका उत्तर पाने का प्रयत्न करें। यदि हमारे जीवन में समता है तो समझना चाहिए कि हम शरीर से भी स्वस्थ हैं और मन से भी स्वस्थ हैं। यदि समता नहीं है तो शरीर से भी स्वस्थ नहीं हैं और मन से भी स्वस्थ नहीं हैं। हम स्वास्थ्य को दो भागों में बांटते हैं- एक है शारीरिक स्वास्थ्य और दूसरा है मानसिक स्वास्थ्य। मन स्वस्थ है तो समझ लेना चाहिए कि शरीर स्वस्थ है और यदि शरीर स्वस्थ है तो समझ लेना चाहिए कि मन स्वस्थ है। शरीर और मन दोनों जुड़े हुए हैं। मन शरीर को प्रभावित करता

है और शरीर मन को प्रभावित करता है। किंतु मन का प्रभाव शरीर पर अधिक गहरा होता है। यह सदैव आवश्यक नहीं है कि शरीर स्वस्थ है तो मन स्वस्थ हो परंतु यदि मन स्वस्थ है तो शरीर स्वस्थ होगा ही। जहां तक हम अपने मन को संतुलन में रख पाते हैं उतना-उतना हम अपने मन को स्वस्थ बनाने की ओर एक-एक कदम बढ़ते जायेंगे। मन का असंतुलित होना हमारे मानसिक स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट लाता जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त करने में सबसे पहले आवश्यक है- स्वयं को जानना। जो व्यक्ति अपने आप को नहीं जानता, वह मन से स्वस्थ नहीं होता। मानसिक स्वास्थ्य के लिए अपने आपको जानना बहुत ज़रूरी है। जो अपनी क्षमता को नहीं जानता, अपनी अक्षमता को नहीं जानता, वह व्यक्ति मन से स्वस्थ कैसे हो सकता है? हमारे में योग्यता है, क्षमता है, किन्तु हमने

कभी अपने-आपको जानने का प्रयत्न नहीं किया। व्यक्ति सक्षम होते हुए भी अपने आपको अक्षम अनुभव करता है। मन निराशा से भर जाता है। अपने प्रति अभद्र व्यवहार देखकर व्यक्ति परेशान हो उठता है, मन में असंतोष उभर आता है। जब वह अपनी अक्षमता को नहीं जानता तब वह दूसरों को ही देखता है, स्वयं को नहीं देख पाता। मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्वयं की योग्यता और अयोग्यता का निरीक्षण बहुत आवश्यक है। इसके बाद ही हम सही निर्णय पर पहुँच सकते हैं कि मेरे प्रति जो धारणा बनायी जा रही है वो कहां तक सही है। जब हम स्वयं को जान जाते हैं, पहचान जाते हैं तो किसी के निरीक्षण से हम दुःखी या उदास नहीं होते। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है हम इन सब बातों से ऊपर उठ जाते हैं और अपने मन के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रख पाते हैं।

मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए कार्यों के परिणामों को स्वीकार करना भी आवश्यक है। हम कर्म करते हैं परंतु उसके परिणामों को स्वीकार नहीं करते और इसलिए मन में असंतोष और अशांति पैदा होती है। जब हम अपने किए गए कार्य के परिणाम से स्वयं को बचाने का प्रयत्न करते हैं तभी हमारा मानसिक स्वास्थ्य खतरे में पड़ जाता है। परिणाम को स्वीकार करने के लिए मन बहुत शक्तिशाली होना चाहिए। जो मन शक्तिहीन होता है वह कभी परिणामों को स्वीकार नहीं कर सकता।

हमें अच्छे या बुरे सभी प्रकार के परिणामों को स्वीकार करना चाहिए। जिस व्यक्ति में परिणामों को स्वीकार करने का साहस नहीं होता, भय होता है वह परिणामों को दूसरे के ऊपर डाल देता है तथा स्वयं बच निकलना चाहता है। यदि परिणाम अच्छा है तो उसका श्रेय स्वयं लेना चाहेगा और यदि बुरा परिणाम है तो उसका अश्रेय दूसरों पर डाल देगा। ऐसा करने वाले व्यक्ति का मन कभी भी स्वस्थ नहीं रह सकता। जो भी कर्म हमारे द्वारा होता है उसका परिणाम अच्छा हो या बुरा उसका

वह अपने आप से बातें करना भूल जाता है और मन को कुछ भी सोचने के लिए स्वच्छंद छोड़ देता है जिससे मन अपनी मर्जी से विचार करने लगता है। कुछ समय पश्चात् मन पर नियंत्रण पाना कठिन हो जाता है और फिर हम मन के अनुसार ही चलने लग जाते हैं। और जिनके सामने हमने अपने आप को जो हम नहीं हैं ऐसा दिखाया है उनको जब हमारी सच्चाई का पता चलता है तो हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इन सब बातों में फंसकर हमारा मन और ही अस्वस्थ हो जाता है।

स्वस्थ होने के लिए शरीर की क्रियाओं का ठीक होना और मन की प्रसन्नता का होना-दोनों आवश्यक हैं। मन की प्रसन्नता का अर्थ हर्ष नहीं है क्योंकि जहाँ हर्ष है वहाँ शोक है और जहाँ शोक है वहाँ हर्ष है। केवल हर्ष या केवल शोक नहीं होता।

जिसमें हर्ष और शोक दोनों नहीं हैं, वह है मन की निर्मल अवस्था, मन की प्रसन्न अवस्था। इस अवस्था में मन शांत रहता है और स्थायी प्रसन्नता को महसूस करता है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य को अलग नहीं किया जा सकता। कोई व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है या नहीं वह उसकी वेशभूषा, उसके व्यवहार, विचार, प्रतिक्रिया, स्वभाव आदि से पता चलता है। कभी संतुलित व्यवहार और कभी असंतुलित व्यवहार करने वाले का मन कभी स्वस्थ नहीं होता। जो व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है, उसके प्रति सामने वाला कैसा भी व्यवहार करे, वह अपना

संतुलन नहीं खोएगा, वह अच्छा व्यवहार ही करेगा। मानसिक रूप से स्वस्थ न होने का दूसरा सबसे बड़ा कारण है कि व्यक्ति विचार करना नहीं जानता। वह सोचने कुछ बैठता है और सोच कुछ और लेता है। व्यक्ति जानता ही नहीं कि कैसे सोचना चाहिए, कैसे चिंतन करना चाहिए। सोचते समय मनुष्य के सामने अनेक तर्क प्रस्तुत होते हैं और वह अपने सोचने के मार्ग से भटक जाता है। वह समर्थ के बजाय व्यर्थ एवं नकारात्मक विचारों में ही फंसने लग जाता है जिससे उसके मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और मन पर बुरा प्रभाव पड़ने के परिणामस्वरूप चिंतन और भी बुरा होने लगता है और ये एक सर्कल बनता चला जाता है। जब मन स्वस्थ होता है तब व्यक्ति का चिंतन भी स्वस्थ होता है वह सही बात को सही ढंग से सोचता है और फिर इस प्रकार का सर्कल बनता है। इन्हीं विचारों के फलस्वरूप हमारे शरीर का स्वास्थ्य भी अच्छा या बुरा होता है।

विभिन्न परिस्थितियों में होने वाली विभिन्न प्रतिक्रियाओं के द्वारा समझा जा सकता है कि व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य कैसा है। जो व्यक्ति संतुलित जीवन जीता है, समता का जीवन जीता है, सहिष्णुता का जीवन जीता है, मन को आवेगों और निराशाओं से दूर रखता है वही व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होता है तथा अपने जीवन में प्रसन्नता एवं आनंद का अनुभव करता है।

स्वयं को जानो...

- ब्र.कु. शांभिका, शांतिवन

उत्तरदायित्व हमें ही लेना चाहिए।

सत्य के प्रति समर्पण भाव भी मानसिक स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी है। जो भी सार्वभौमिक सच्चाइयां हैं, व्यापक सत्य हैं, उनके प्रति जो

मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त करने में सबसे

पहले आवश्यक है- स्वयं को जानना। जो

व्यक्ति अपने आप को नहीं जानता, वह मन से

स्वस्थ नहीं होता। मानसिक स्वास्थ्य के लिए

अपने आपको जानना बहुत ज़रूरी है। जो

अपनी क्षमता को नहीं जानता, अपनी

अक्षमता को नहीं जानता, वह व्यक्ति मन से

स्वस्थ कैसे हो सकता है? हमारे में योग्यता है,

क्षमता है, किन्तु हमने कभी अपने-आपको

जानने का प्रयत्न नहीं किया। व्यक्ति सक्षम

होते हुए भी अपने आपको अक्षम अनुभव

करता है।

समर्पित रहता है, वह मानसिक दृष्टि से स्वस्थ रह सकता है।

एक अन्य तथ्य जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है वह है- सहिष्णुता का विकास। सहिष्णुता को विकसित किए बिना कोई व्यक्ति संतुलित जीवन नहीं जी सकता। जो व्यक्ति सहिष्णु नहीं होता वह अपने मन को सदा दुःख में डाले रहता है। छोटी सी कोई परेशानी आती है और मन बेचैन हो उठता है। सहिष्णुता का विकास होने पर असंतोष मिट जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति अपने आपको जैसा है वैसा प्रस्तुत करे। समाज में व्यक्ति अपने आपको यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना नहीं चाहता। वह अपने आपको बड़े के रूप में प्रस्तुत करता है जिससे कि उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़े किन्तु जब सच सामने आता है तो बहुत सारी कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं। तब मन-मुटाव होता है, लड़ाइयां होती हैं, मानसिक अशांति होती है और वह वर्षों तक बनी रहती है। समाज में अपने आपको अयथार्थ रूप में प्रस्तुत करना अपने आपको धोखा देना है, दूसरों को धोखा देना है। इससे व्यक्ति न खुद चैन से जी पाता है न अपने परिवार और सगे-संबंधियों को जीने देता है। वह सदा वो बनने की कोशिश की होड़ में लगा रहता है जो उसने स्वयं को सबके सामने प्रस्तुत किया है। इसमें ही उसकी जिन्दगी बीत जाती है, वह कभी स्वयं के लिए समय नहीं निकाल पाता।



शांतिवन। रेडियो मधुवन में मुलाकात के बाद समूह चित्र में महामंडलेश्वर श्री श्री जन्मेजयहरण जी, श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण अध्यक्ष, जानकी घाट अयोध्या। साथ हैं ब्र.कु. यशवंत, ब्र.कु. दत्तात्रय, ब्र.कु. राजेश तथा ब्र.कु. मुकेश।



अंबिकापुर-(छ.ग.)। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए छ.ग. प्रतिपक्ष के नेता टी.एन.सिंहदेव एवं ब्र.कु. विद्या।



धोलाभाटा-अजमेर। मेयर कमल बाकोलिया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. योगिनी।



सोनपुर-बिहार। त्रि-दिवसीय राजयोग द्वारा तनावमुक्ति कार्यक्रम के पश्चात् सोनपुर रेलवे डिवीज़न के डी.आर.एम. राजेश तिवारी एवं उनकी पत्नी, ब्र.कु. कंचन, ब्र.कु. संजय तथा अन्य।



तानसेन-नेपाल। कारागार में आध्यात्मिक प्रवचन के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. भगवान, जेल अधीक्षक धीरेन्द्र प्रसाद पन्त, ब्र.कु. भानु तथा अन्य।



लुधियाना। '7 अरब सत्कर्मों की महायोजना' ट्रेनिंग का उद्घाटन करते हुए अरविन्दो कॉलेज के प्रिंसिपल रोशन लाल बहल, ब्र.कु. राम प्रकाश, ब्र.कु. राज तथा ब्र.कु. सरस।



फाज़िल नगर। कैबिनेट उद्योग मंत्री कलराज मिश्रा के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती तथा ब्र.कु. सावित्री।



बड़ौत-उ.प्र.। शंकराचार्य श्री दिव्यानंद जी महाराज, भानुपुरा पीठ, म.प्र. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मोहिनी।



अमरवाड़ा-छिंदवाड़ा। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन के बाद एस.डी.एम. पी.सी. गोपचे, नगरपालिका अध्यक्ष नमिता चौरसिया तथा समाज सेविका कविता चक्रवर्ती को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती।



अमरेली-धारी(गुज.)। बी.जे.पी द्वारा आयोजित नवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम में तन्मय वेक्रिया, कलाकार, तारक मेहता का उल्टा चश्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं विधायक मनसुख भाई भुवा तथा सरपंच जीतू भाई जोशी।



भावानगर-हि.प्र.। एन.एस.एस. कैम्प के बच्चों को 'आध्यात्मिकता का जीवन में महत्व' विषय पर समझाने के बाद एन.एस.एस. ग्रुप इंचार्ज हीरा सिंह नेगी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुलदीप।



इन्दौर-महालक्ष्मी नगर। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं एस.डी.एम. डी.के. नागेंद, महालक्ष्मी रहवासी संघ के अध्यक्ष अर्जुन गौड़, ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. अनीता तथा अन्य।

अखाद्य वस्तुएं और उनका शरीर पर प्रभाव

अपनी माँ का दूध अमृतदूसरे की माँ का दूध रोग कारक - IV

15. धनी परिवार और आराम तलब स्त्री, पुरुषों का शरीर फूला हुआ, थलथल और मोटा होता है जिसका कारण घी, दूध और दूध के पदार्थों का अधिक सेवन करना है।

16. प्राणी जगत में अपनी माँ को छोड़कर दूसरे की माँ का दूध कोई नहीं पीता। मानव को छोड़कर आग में जला दूध कोई जानवर नहीं पीता। दूध एक-एक बूंद चूसने की चीज़ है, पीने की नहीं।

17. दाँत आने के बाद प्रकृति दूध बन्द कर देती है, फिर पहले वाला बच्चा, दूसरा बच्चा होने पर अपनी माँ के दूध की तरफ पलटकर नहीं देखता, यह प्रकृति का सिद्धान्त है।

18. अबोल पशु को माँ कहकर, टाँगें बांधकर, माँ-बच्चे को दुःखी कर जबरदस्ती उसका दूध निकाल लेते हैं। उधर बछड़ा दूध के लिए बें-बें करता पर मनुष्य निर्दयी बनकर यह एक बड़ा अपराध या पाप करते हैं। फिर

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर



ब्र.कु. ललित शांतिवन

रोगी बनकर अपने ही कर्मों का भोग भोगते हैं। औरों को दुःख देने से प्रतिक्रिया में दुःख ही मिलता है। 19. जब तक ज़रूरत थी, प्रकृति ने माँ के द्वारा दूध दिया। अब ज़रूरत खत्म होते ही ठोस आहार चबाने के लिए दाँत देकर दूध बन्द कर दिया। देने वाली प्रकृति को पता है, कब, क्यों, कहाँ और क्या दिया जाए या बन्द कर दिया जाए।

शैशव अवस्था के बाद प्रकृति द्वारा जल के सिवाय कोई भी तरल पदार्थ मानव के लिए नहीं रचा गया है:

1. मनुष्य तो क्या यहाँ तक कि महात्मा, योगी कहलाने वाले पुरुष भी जानवर के दूध को अपनी जायदाद और हक समझकर जीवन भर बच्चे बने रहने का गौरव लूटते हैं। अपने आपको धार्मिक, आध्यात्मिक तथा महात्मा कहलाने वाले पुरुष प्रकृति के अत्यंत सीधे स्पष्ट निर्देश को पहचानने में चूक जाते हैं और

हमारे मन की स्थिति हमारे हाथ में...

प्रश्न:- वास्तव में अगर हम देखें भी कि वो बीता हुआ समय हमें क्यों याद आता है? जब हमारे वर्तमान में कोई दुःख आता है तो वो एकदम से याद आ जाता है, नहीं तो वो याद नहीं आता है।

उत्तर:- यह हमारे मन में सबसे ऊपर में होता है। अगर वो अतीत खत्म हो गया, अगर वो दुःख दूर हो गया, तो फिर हमारे मन में कोई डिस्क नहीं होती है। अब आपने कहा कि जब भी दर्द क्रियेट होता तब मुझे वो याद क्यों आता है?

क्योंकि वहाँ अभी भी दर्द है। मन में भी दर्द क्रियेट हुआ तो क्या हुआ, तुरंत याद आया। विशेषकर हम अपने परिवारिक संबंधों में देखते हैं कि परिवार में कोई झगड़ा हुआ, भाई-बहनों के बीच में या पति-पत्नी के बीच में, तो हम कहेंगे कि ये बात तो हमें जीवन भर याद रहने वाली है। कई बार हम बहुत दृढ़ता से कहते हैं - मैं जीवन भर आपको क्षमा नहीं करूंगा। मानो कि मैं खुद जीवन भर दुःख-दर्द में रहने वाला हूँ। कितनी देर रहना है और कितनी जल्दी भूलना है, ये क्षमता हमारी अपनी है। आपको चाहिए तो आप एक साल दर्द में रहें, दस साल रहें या आप दस मिनट में उसको भूल जायें, जितना हम अपने ऊपर काम करते जायेंगे तो वो समय का अंतर कम होता जायेगा। जितना मैं अपने अंदर वो ताकत भरती जाऊंगी, वो समय जो मुझे लगेगा अपने आपको ठीक करने में वो कम होता जायेगा, जितना वो कम होता जायेगा हम धीरे-धीरे अतीत को भूलते जायेंगे।

प्रश्न:- सच में अमेज़िंग है, इसको हमें प्रयोग करके देखना पड़ेगा कि वो दर्द इतनी बार रिपीट हो चुका होता है कि वो डिलीट कैसे होगा। आज हमने बहुत बड़ी बात चैलेंज की है उसको समझा है अब उस पर काम करना बाकी है।

ड्रिल:- आराम से बैठें...बहुत कुछ...

पकड़कर रखा था आज तक... परिस्थितियाँ... लोगों के व्यवहार... जो आज दिन तक समझा... लोगों का दिया हुआ दर्द... ये सब कुछ... मैंने पकड़कर रखा था... और बार-बार... स्मृति में लाते भी... मैं आज भी... उस दर्द का अनुभव कर सकती हूँ... आज... इस क्षण... अपने आपसे प्रतिज्ञा करें... कि हम अब अपने आपको... और दर्द नहीं देंगे... मेरे अंदर... वो शक्ति है... मैं शक्तिशाली आत्मा हूँ... विच कैन से स्टेबल... इरेस्पेक्टिव... वाटएवर हैपनिंग आऊट साइड... दर्द... मुझे कोई और नहीं देता... दर्द मैं खुद ही क्रियेट करती हूँ... जैसे ही... ये स्मृति आती... तो फिर... क्षमा दूसरों को नहीं... लेकिन क्षमा... आपने... आपको... करें... क्योंकि हमने खुद को दर्द दिया... आज... अपने आपको ये याद दिलायें... कि अपने मन की स्थिति... हमारे अपने हाथ में... और वो सब... जिन बातों को पकड़कर रखा

था... उन्हें छोड़ना... बहुत आसान हो जायेगा... जब ये याद रहेगा... कि उन्होंने दर्द नहीं दिया... आई कैन लेट गो... ट्रायिंग सी... ईच वन लिविंग दैट... स्पेस ऑफ माई माइंड... लेट देम गो... सो आई कैन दैट फ्री... एण्ड पावरफुल...

प्रश्न:- अगर हम बीते हुए समय की बात करते हैं तो हमारे सामने कई छोटे-बड़े अनुभव भी हैं। खुद ही अपने आपको कैसे ठीक करना है ये हमने समझा, हम न किसी और को बदलेंगे और न ही परिस्थिति को बदलेंगे और वो बीता हुआ समय भी खत्म हुआ। लेकिन कुछ परिस्थितियाँ ऐसी हैं जैसे कि हमारे किसी करीबी की अचानक मृत्यु हो गई। उसका

अधार्मिकता, अत्याचार एवं पाप के भागीदार हो जाते हैं। इस सच्चाई से वे जीवन भर अपरिचित रहते हैं कि संसार का कोई भी प्राणी कभी किसी के लिए मेहनत नहीं करता, खाना नहीं जुटाता। हर एक प्राणी को अपने आहार के लिये स्वयं प्रयत्न करना होता है। हर एक का आहार प्रकृति ने निर्धारित किया है जिसका हमारी अन्तर्सहज प्रेरणा परिचय करवा देती है।

बेगुसराय की कंचन बहन, उम्र-30 वर्ष पिछले 5 वर्षों से थाइराइड की गोलियाँ ले रही थीं एवं धड़कने बढ़ी हुई रहती थीं, वह स्वर्णिम आहार पद्धति लेने से ठीक हो गई।

तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

अधिक जानकारी - सदा स्वस्थ जीवन पुस्तक और डीवीडी,

website: www.everhealthylife.org
Email: healthywealthyhappyclub@gmail.com

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

दुःख आज भी उतना ही बड़ा घाव है और हमने किसी तरह से अपने आपको संभाल लिया। तब ऐसे समय में लोग इतना समझते हैं, इतनी बातें करते हैं कि पूछो मत। हम अपने आपको संभाल भी लेते हैं, साधारण जिंदगी भी जी लेते हैं, सबके साथ भी जी रहे हैं, काम पर भी जा रहे हैं लेकिन वो घाव नहीं भरता है इसका मुख्य कारण क्या है?

उत्तर:- निश्चित ही जीवन में हमें बहुत सारे उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं लेकिन ये जो परिस्थिति है 'परिवार में किसी सदस्य की या अपने किसी नजदीकी दोस्त की मृत्यु हो' तो ये जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा की घड़ी होती है, जिसमें हमने कहा कि दर्द नैचुरल है और हम सोच भी नहीं सकते कि इसका कोई विकल्प भी है। यह बहुत बड़ी चुनौति है। यह जीवन में वो परिस्थिति है, जिसको पार करने के लिए हमें बहुत ताकत की आवश्यकता होती है। लेकिन इसमें भी अगर हमें सही जानकारी है, बुद्धि है, और फिर साथ-साथ क्षमता भी है तो हम इस परिस्थिति को भी पार कर सकते हैं।

सबसे पहली बात जो हम देखते हैं कि जब किसी के बच्चे की असमय मृत्यु हो जाती है, तो पेरेंट्स के लिए इस परिस्थिति का सामना करना बहुत कठिन हो जाता है और वो ये कहते भी हैं कि अब तो सारा जीवन दर्द में ही बीतना है। यहाँ तक कि वो दर्द इतना अधिक बढ़ जाता है कि अंत में वो कहते हैं कि अब हमें जीना ही नहीं है, हमारे जीने का अब कोई मकसद ही नहीं है। ऐसी परिस्थिति में उन्हें अपने परिवार के अन्य सदस्य दिखाई ही नहीं देते हैं, जैसे कि उनका कोई अपना है ही नहीं। हमारी बातचीत इस पर हो रही थी कि हमें अपना ध्यान कैसे रखना है, क्योंकि अब जिसका हम ध्यान रख रहे थे, वो नहीं है तो उस दुःख में भी हम अपना ध्यान कैसे रखें। - क्रमशः



ब्र.कु. शिवानी

कथा सरिता

रचनात्मकता

एक व्यापारी की पत्नी की असमय मृत्यु हो गई। उसका बेटा छोटा और शरारती था, इसलिए उसे घर पर अकेला नहीं छोड़ा जा सकता था। वह रोज़ व्यापारी के साथ उसकी दुकान पर आने लगा। जो भी ग्राहक आते, वह उनकी पगड़ी या टोपी उतारकर फेंक देता था। व्यापारी उसे बहुत मना करता, किंतु वह बाज नहीं आता। व्यापारी बहुत परेशान हो गया। एक दिन उसके शहर में एक महात्माजी आए। वह उनके पास गया और अपनी समस्या उनके सामने रखी। महात्माजी बोले - मैं तुम्हारे बेटे को सुधार दूंगा, किंतु शर्त यह है कि तुम बेटे के कामों में कोई रोक-टोक नहीं करोगे। व्यापारी सहमत हो गया। अगले दिन महात्मा सिर पर साफा बांधकर दुकान पर आए। जैसे ही वे आकर बैठे, बालक ने उनका साफा उतारकर सड़क पर फेंक दिया। महात्मा ने ताली बजाते हुए कहा - शाबास बेटे, अब ज़रा दौड़कर साफे को उठा लाओ और मेरे सिर पर बांध दो। बालक गया और साफा लाकर उल्टा-सीधा उनके सिर पर लपेट दिया।

दूसरे दिन महात्मा फिर साफा बांधकर दुकान पर आए। दुकान पर आने के पहले वे सामने एक लकड़ी का गट्टर और छोटी कुल्हाड़ी रख आए थे। बालक उनका साफा उतारकर फेंकता, इससे पहले ही उन्होंने कहा - बेटा, उस कुल्हाड़ी से ज़रा लकड़ियों के छोटे-छोटे टुकड़े कर दो। लड़के ने खुशी-खुशी वह काम कर दिया। इस प्रकार महात्मा ने आठ दिन तक उससे कोई न कोई काम करवाया और लड़के ने प्रसन्न होकर किया। अब उसकी साफा उतारने की आदत भी छूट चुकी थी। व्यापारी ने महात्माजी से कहा - आपने तो मेरे बेटे पर जादू कर दिया। तब महात्मा बोले - हम लोग दिनभर बच्चों से बीसियों बार कहते हैं - यह मत करो, वह मत करो, लेकिन एक बार भी यह नहीं कहते कि यह करो। बच्चे हमें काम करते हुए देखते हैं, तो वे भी चाहता है कि हम भी कुछ काम करें। बच्चे की इस इच्छा को समझकर ही उससे कुछ न कुछ काम करवाया जाए। व्यापारी ने अपनी भूल समझ ली।

स्व की आहट, ना करो मुझे आहत...

पेज 2 का शेष ...

की सेवा में लगेगा, वह नुकसान ही करेगा दूसरों का, क्योंकि जिसको अभी खुद का ही हित पता नहीं है, उसे दूसरे का हित पता नहीं हो सकता। आत्म-प्रवेश हुए बिना सेवक होने का मतलब है कि आप कोई न कोई मिसचौफ, कोई न कोई शरारत पैदा करोगे। यह दुनिया शरारतियों से कम परेशान है, शुभ इच्छाओं से ज्यादा परेशान है। वे ऐसा ऐसा इलाज कर देते हैं शुभ इच्छा से, कि उनके पास आपको जाना पड़ता है, वे नर्क में ले जायें तो भी जाना पड़ता है, क्योंकि इतनी शुभेच्छा से ले जा रहे हैं, इतने भले मन से ले जा रहे हैं, इतना कष्ट उठा रहे हैं आपके लिए कि आप मना भी नहीं कर सकते हैं कि क्यों नर्क की तरफ घसीट रहे हो! इन्कार भी करना अशोभनीय लगता है, क्योंकि बिचारा आपकी कितनी सेवा कर रहा है!

सेवा का हक केवल उसे उपलब्ध होता है जो ध्यान की गहराई में पहुंच गया है, जिसे स्वयं के हित का ज्ञान है, उससे पहले सेवा का कोई हक नहीं। क्योंकि जब तक आपको आनंद नहीं मिला है, तब तक आप आनंद दे नहीं सकते। आप दुःख ही दे सकते हो। नाम तो आप कुछ भी रखो, किसी भी प्रकार की सेवा का नाम दो, लेकिन आनंद है आपके भीतर, तो वो आनंद दूसरों में भी प्रवाहित हो सकता है।

“तभी आप उसकी समस्त शक्तियों का उपयोग कर सकोगे और उन्हें किसी योग्य सेवा में लगा सकोगे, उससे पहले नहीं। जब तक आपको स्वयं कुछ निश्चय नहीं हो जाता, आपके लिए दूसरों की सहायता करना असंभव है”।

कभी हम हवाई यात्रा में सफर करते हैं तो वहाँ एयरहोस्टेस सूचना देती है कि जब भी विमान ऊँचाई पर हो, ऑक्सीजन की कमी हो तो पहले ऑक्सीजन का मास्क स्वयं पहनें फिर दूसरों की सहायता करें। क्योंकि व्यक्ति जब खुद स्वस्थ होगा तभी तो दूसरों की सहायता कर सकेगा। जब सेवा करने की हमारी इच्छा है, तो स्वयं का हित भी जिसको पता हो वही तो हितैसी बन सकेगा।

बहाना

अक्सर असफल लोग एक भयानक बीमारी से पीड़ित होते हैं। इस बीमारी को अपेंडिसाइटिस की तर्ज पर बहानासाइटिस का नाम दिया जा सकता है। हर असफल व्यक्ति में यह बीमारी बहुत विकसित अवस्था में पाई जाती है और आम आदमियों में भी यह थोड़ी-बहुत तो होती ही है। सफलता की सीढ़ियों पर कभी न रुकने वाला व्यक्ति बहानासाइटिस का रोगी नहीं होता, जबकि असफलता की ढलान पर फिसलने वाला इस बीमारी से गंभीर रूप से पीड़ित होता है। अपने आसपास के लोगों को देखने पर आप पाएंगे कि जो आदमी जितना सफल होता है, वह उतने ही कम बहाने बनाता है, परंतु जो कहीं नहीं पहुंच पाता और उसके पास आगे पहुंचने की कोई योजना भी नहीं होती, उसके पास ही बहाने थोक में मौजूद रहते हैं। मैं जितने बेहद सफल व्यक्तियों से मिला हूँ उनके सामने बहानों की कोई कमी नहीं थी - रूजवेल्ट अपने बेजान पैरों का बहाना बना सकते थे, कैनेडी यह कह सकते थे 'प्रेसिडेंट बनते वक्त मेरी उम्र कम थी', जॉनसन और आइजनहावर हार्ट अटैक के बहाने बना सकते थे। बहानासाइटिस का अगर वक्त पर सही इलाज नहीं किया जाए, तो स्थिति बिगड़ सकती है। विचारों की इस बीमारी का शिकार आदमी इस तरह से सोचता है - 'मेरी हालत उतनी अच्छी नहीं है जितनी कि होनी चाहिए। अब मैं लोगों के सामने अपनी इज़्जत बचाने के लिए कौन-सा बहाना बना सकता हूँ? जब किसी 'अच्छे बहाने' को चुन लेता है, तो फिर वह इसे कसकर जकड़ लेता है। जब हम उनमें दोहराव की खाद डालते हैं तो विचार, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, तेजी से फलने-फूलने लगते हैं। शुरुआत में तो बहानासाइटिस का रोगी जानता है कि उसका बहाना कमोबेश झूठ है, परंतु जितनी बार वह अपने बहाने को दोहराता है, उतना ही उसे यह सच लगने लगता है। बहानासाइटिस या बहाने बनाने जैसी बीमारी इंसान को ज़िंदगी भर सफल नहीं होने देती।

स्वर्ग और नर्क

यदि संयम, प्रेम और परमार्थ जैसे उदात्त भावों की खाद हृदय रूपी खेत में निरंतर डलती रहे, तो यही जीवन स्वर्ग बनने में देर नहीं लगेगी।

एक राजा अपने राज्य के कुछ लोगों से उनके किन्हीं विचारों की वजह से चिढ़ता था। वह चाहता था कि वे भी उसी की तरह सोचें और वह जो कहता है, वैसा ही करें। किंतु स्वतंत्र मत के हिमायती इन लोगों ने विनम्र दृढ़ता से इस बात के लिए इन्कार कर दिया। सो उस राजा ने बदला लेने के उद्देश्य से इन लोगों को ऐसे द्वीप पर निर्वासित कर दिया, जिसे 'नर्क' की उपमा दी जाती थी। वहां अत्यधिक गंदगी थी। हर ओर कचरे का ढेर, बदबू छोड़ती नालियां, तपती रेत थी और हरियाली का नामो-निशान तक नहीं। राजा ने सोचा कि ऐसे अस्वास्थ्यकर माहौल में ये सभी लोग शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे। उसने अपने सैनिकों के द्वारा इन लोगों को उस द्वीप पर छोड़वा दिया। कई वर्ष बीत गए। एक दिन राजा को ख्याल आया कि देखें उन लोगों का क्या हश्र हुआ? किंतु जब राजा वहां पहुंचा, तो अचरज में पड़ गया। उसकी कल्पना के सर्वथा विपरीत द्वीप में प्रवेश करते ही एक शानदार उद्यान दिखा, जिसमें रंग-बिरंगे व सुगंधित पुष्प लगे हुए थे। गंदगी व बदबू का कहीं नामो-निशान न था। सभी ओर स्वच्छता, सुगंध और हरियाली थी। राजा को ऐसा लगा कि वह किसी स्वर्ग में आ गया है। थोड़ा आगे बढ़ने पर उसने वहां उन व्यक्तियों को देखा, जिन्हें मरने के लिए उसने यहां भेजा था। राजा ने उनसे पूछा - क्या यह वही नर्क द्वीप है? उन लोगों ने कहा - हां राजन्, यह वही नर्कद्वीप है। अचंभित राजा ने पुनः प्रश्न किया - आखिर इसकी वे सारी चीजें कहाँ गईं, जो इसे नर्क बनाती थीं? वे सभी लोग हंसकर बोले - महाराज, जब हम यहां आए, तो हमने सबसे पहले कचरे के ढेर हटाए और नालियों को सफाई कर ज़मीन खोदी। फिर उसमें गोबर डाला, जो खाद बन गया। कुछ समय बाद ही यहां हरियाली लहराने लगी। हम लगातार सिंचाई व समुचित देखभाल करते रहे, जिससे इस नर्कद्वीप को स्वर्गद्वीप बनने में देर नहीं लगी। राजा अति प्रसन्न हुआ और उसने उन सभी से हार्दिक क्षमा मांगी।



बुदनी-होशंगाबाद। चैतन्य नौ देवियों की झाँकी के समक्ष दीप प्रज्वलित करते हुए मध्य प्रदेश के मा. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।



विश्रामपुर-(छ.ग.)। चैतन्य देवियों की झाँकी में उदघाटन के बाद परमात्म स्मृति में कलेक्टर जी.आर.चुरेन्द्र, ब्र.कु.पार्वती, ब्र.कु.मंजू व अन्य।



बनखेड़ी-पचमढ़ी। नौ देवियों की झाँकी की आरती उतारते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष योजना गन्धा, ब्र.कु.संध्या, ब्र.कु.रूपा एवं प्रतिष्ठित जनसमूह।



कुशीनगर-गोरखपुर। विश्व महापरिवर्तन आध्यात्मिक मेले में दीप प्रज्वलित करते हुए कुंवर रानी मोहिनी देवी, ब्र.कु. सुरेन्द्र, ब्र.कु. कंचन, ब्र.कु.मीरा तथा अन्य।



रीवा। '7 अरब सत्कर्मों की महायोजना' का भव्य शुभारंभ करने के पश्चात् जिला कलेक्टर राहुल जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सावित्री तथा ब्र.कु. निर्मला।



राजगढ़। विश्व-बंधुत्व दिवस का उदघाटन करते हुए अतिथी फादर अनिस, सेलेंद्र जी, लायन्स क्लब, ब्र.कु. मधु, मोना सुस्तानी व अन्य।



काठमाण्डु-नेपाल। नेपाल के माननीय उप-प्रधानमंत्री तथा स्थानीय विकास मंत्री प्रकाश मान सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज तथा ब्र.कु. किरण।



जम्मू। बी.एस.एफ. फ्रंटियर, हेड क्वार्टर कैम्पस में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट प्रोग्राम' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन, राकेश शर्मा, आई.जी.बी.एस.एफ, ब्र.कु. अशोक गाबा, ब्र.कु. शिव सिंह, नेवी कमांडर, ब्र.कु. रविंदर तथा अन्य।



इन्दौर-पारसी मोहल्ला छावनी। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए शहर के गणमान्य जन तथा ब्र.कु. सुमित्रा।



झालावाड़। 'सिकरेट ऑफ सक्सेस' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ. गिरीश पटेल, मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. बी.डी. बोहरा, हॉस्पिटल के चीफ डॉ. पुष्पा पाण्डे, वुमेन हॉस्पिटल के चीफ डॉ. डी.के. जैन तथा ब्र.कु. मीना।



माउण्ट आबू। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की बेटी उपिन्द्र सिंह कौर और उनके पति विजय टंकाजी से ज्ञान चर्चा करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. शशिकांत तथा अन्य।



पुणे। सकाल के सम्पादक मल्हार अरणकाले को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. विधा।

सद्गुणों को विकसित कर करें आत्मा को तेजोमय

दुनिया में जितनी भी महान हस्तियां होकर गई हैं, उन महान हस्तियों के जीवन का रहस्य क्या था? थे तो वे भी हमारे जैसे ही साधारण मनुष्य चाहे स्वामी विवेकानंद हों, महात्मा बुद्ध हों, महावीर स्वामी हों या मदर टेरेसा हों। आदरणीया दादीजी को भी हमने देखा, पिताश्री ब्रह्मा बाबा को भी देखा कि उनका जीवन स्वधर्म के आधार पर था। इनके जीवन में, इन सातो गुणों के आधार से बैट्री फुल चार्ज थी। हरेक के जीवन में यही देखेंगे की आध्यात्मिक ज्ञान था, आध्यात्मिक विवेक था, पवित्रता थी, ब्रह्मचर्य व्रत था, निःस्वार्थ प्यार उन्होंने संसार की आत्माओं को दिया। शांति से भरपूर उनका जीवन था। सच्चा सुख अर्थात् आत्म-सुख का अनुभव वे करते थे और दूसरों को भी यही प्रेरणा देते थे। जीवन में निरंतर प्रसन्नता, आनंद समाया हुआ था और आत्मशक्ति से वे भरपूर थे। इन सातो गुणों से उनकी बैट्री फुल चार्ज थी, इसलिए दुनिया में वे कई आत्माओं के लिए प्रेरणास्रोत बन गए। वे तो हमारे जैसे इंसान ही थे और हम भी इंसान ही हैं। इन्हीं सतोगुण की शक्ति को हम जीवन में जागृत करें। अपनी बैट्री को फुल चार्ज करें तो वास्तविक जीवन स्वधर्म के आधार पर जीना आसान हो जायेगा, हर संघर्ष में विजयी बनना निश्चित हो जायेगा। दूसरों के लिए भी प्रेरणा के आधार हम बन जायेंगे। यही विधि भगवान ने अर्जुन को बताया और कहा कि यदि तुम इस युद्ध में मरोगे तो स्वर्ग में राज्य प्राप्त करोगे। युद्ध में जीतोगे तो पृथ्वी पर स्वराज्य अधिकार को प्राप्त करोगे। स्वराज्य अर्थात् आत्मा स्वयं की इन्द्रियों के ऊपर राज्य अधिकार को प्राप्त करेगी। यह युद्ध आसुरी और दैवी संस्कारों के बीच

चलता है। जो व्यक्ति अपने आसुरी संस्कारों को जीत लेता है वह स्वर्ग में भी देव पद प्राप्त करने के योग्य बन जाता है। जहां भगवान ने स्वधर्म के आधार पर युद्ध करने की प्रेरणा दी, कैसे हर परिस्थिति में विजयी बनेंगे इसका विश्वास भी दिलाया। ये युद्ध अंतर जगत का युद्ध है जो हर एक के अंदर समाया हुआ है। जो कुरुक्षेत्र है वह दैवी और आसुरी संस्कार के बीच में है। हमें अपने जीवन को आसुरी संस्कारों से मुक्त करना है और दैवी संस्कारों से भरपूर करना है, जिससे हम अपने जीवन के हर संघर्ष में विजयी हो सकें। यह था पहले और दूसरे अध्याय का सार। सर्व शास्त्रमयी शिरोमणी श्रीमद्भगवद्गीता जो भगवान की मधुर वाणी है, वह हम सर्व अर्जुनों के प्रति मधुर संदेश है कि हमें जीवन को किस तरह जीना है। प्रथम भाग में हमने देखा कि किस प्रकार से गीता का अस्तित्व हम सब के सम्मुख आया। उसी के साथ-साथ अर्जुन जैसे एक महावीर, महायोद्धा जिसकी भी मनःस्थिति जब निराश हो गयी तो उस मनःस्थिति में से उसको बाहर निकालने के लिए भगवान ने सर्व प्रथम उसको आत्मा का यथार्थ ज्ञान दिया। आत्मा का ज्ञान देते हुए यही समझाया की यह शरीर तो एक वस्त्र मात्र है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है अर्थात् जो सदियों से हम सुनते आए हैं कि

अपने आपको जानो, अपने आपको पहचानो वही पहचान अर्जुन को स्वयं से करायी कि शरीर एक साधन है और आत्मा एक साधक है। वह एक दिव्य और शाश्वत् शक्ति है, जिसके ऊपर प्रकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता

गीता ज्ञान का

आध्यात्मिक

रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा



है। लेकिन हाँ, आत्मा के संस्कारों में हम जितना सद्गुणों का विकास करते हैं, उतना ही हम आत्मा की शक्ति को व आत्मा की आभा को बढ़ाते हैं तथा उसके दिव्य तेज को विकसित करते हैं। जितना हम दुर्गुणों को अपने जीवन में स्थान देंगे, उतना ही आत्मा की चमक कम होती जाती है।

एक छोटे बच्चे को भी हम देखते हैं तो उसका कितना निर्मल और पवित्र स्वरूप होता है। हर आत्मा का असली स्वरूप निर्मल और पवित्र है। ये आत्मा की वास्तविकता है। इसलिए जहाँ कहीं हम पवित्र वातावरण में जाते हैं तो एक गहन शांति का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार आप जब अपवित्र वायुब्रेशन्स में जायेंगे तो वहाँ पर मन बेचैन और परेशान हो उठता है। आत्मा स्वाभाविक रूप से पवित्र है। यह उसका निजी स्वरूप है। जब हम ईश्वर के धाम से इस संसार में आए थे तो उसी स्वरूप में आए थे।

हर वर्ष नए साल को बेहतर और खुशनुमा बनाने के लिए हम सभी

कैसे हों नववर्ष में हमारे संकल्प

- ब्र.कु. निधि, सर्वोदय नगर, कानपुर

द्वेरा संकल्प, विचार व वायदे अपने आप से करते हैं। अपनी योजनाओं, परियोजनाओं एवं ख्वाबों को साकार करने हेतु मन में अनेकों विचार तथा बातें आती हैं। उनमें बहुत से संकल्प सकारात्मक या नकारात्मक एवं दृढ़ या कमजोर होते हैं। नकारात्मक या कमजोर संकल्प हमें जीवन में आगे नहीं बढ़ने देते और हमारे व्यक्तित्व को भी निखरने नहीं देते, जिससे हम जिंदगी से भी हताश और निराश होने लगते हैं। रिशतों व संबंधों पर भी हमारे संकल्पों, सोच का गहन प्रभाव पड़ता है। इसलिए अपनी संकल्प शक्ति को शुभ एवं सकारात्मक बनाएं, तभी जीवन में सच्ची खुशियाँ, भरपूरता व सुख की महसूसता होगी।

क्या हों हमारे संकल्प? - मनुष्य के मस्तिष्क-पटल पर हर मिनट में हज़ारों संकल्प-विकल्प आते जाते हैं। हमारी संकल्प शक्ति पलक झपकने से भी ज्यादा तेज़ गति से चलती है। इसलिए चेक करते रहें कि हमारे संकल्प कौन से हैं? अच्छे या बुरे। अच्छे या श्रेष्ठ, स्नेह युक्त, दृढ़ संकल्प अधिक से अधिक हमारे मन-बुद्धि में चलें और हमारा नया वर्ष सुखमय, सार्थक एवं उमंग-उत्साह पूर्ण बने इसके लिए हमें अपने मन को सहज, सरल, मजबूत, सकारात्मक तथा पवित्र बनाना होगा। साथ ही हमारे हर संकल्प में दूसरों के लिए

शुभ भावना, शुभ-कामना व सहयोग की भावना हो, यह हमारी कोशिश होनी चाहिए। संकल्प प्रभावशाली, नवीनता की महानता का अनुभव कराने वाले, जीवन में नई प्रेरणा भरने वाले तथा श्रेष्ठ स्थिति बनाने वाले होने चाहिए, जिससे हम अधिकारी बन जीवन में हर कदम पर सफलता पाते रहें। मन में उठने वाले संकल्पों/विचारों पर हमारा नियंत्रण होना चाहिए जिससे जब चाहें फुल स्टॉप लगा दें और व्यर्थ संकल्पों को आने से रोक सकें। यह भी ध्यान देने की ज़रूरत है कि हम केवल सकारात्मक बातें सोचें जिससे हमारे संकल्प समर्थ व श्रेष्ठ बने। इसके लिए अपने मन-बुद्धि को शुद्ध एवं पवित्र बनाना होगा, तभी संकल्प शक्तिशाली और स्फूर्तिवान होंगे तथा दिल से निकली हुई बात/संकल्प तुरंत पूरा होगा। मान लीजिए कि आपके कोई निकटतम को गंभीर बीमारी हो जाए जिससे उन्हें बहुत पीड़ा का सामना करना पड़ रहा हो और डॉक्टर ने भी जवाब दे दिया हो। उस समय ऐसी आत्मा को सांत्वना या तसल्ली रूपा साकाश दें तो उस व्यक्ति को खुशी, शांति और आनंद की अनुभूति कराने में सहायक बन जाएंगे तथा उन्हें बीमारी से लड़ने एवं सामना करने की क्षमता मिलेगी। कैसे बनाएँ संकल्प श्रेष्ठ? - यदि हमें अपनी संकल्प शक्ति को श्रेष्ठ व समर्थवान बनाना

है तो अपनी सोच को गुणवान और सकारात्मक बनाना होगा।

सहनशीलता, सन्तोष, त्याग, मधुरता, नम्रता, स्नेहीपन, दृढ़ निश्चय आदि गुण अपनाकर एवं अपनी दृष्टि परिवर्तन करके भी हम समर्थ संकल्पों का आह्वान कर सकते हैं। उमंग उत्साह के साथ सदा सहयोगी आत्मा बनकर सहयोग के संकल्प कार्य में लगाओ तो विजयी अवश्य बनेंगे। ऐसे सहयोग के संकल्प श्रेष्ठ बन जाते हैं जब हम अपने साथ औरों के भी संकल्पों में बल भर देते हैं। ऐसे श्रेष्ठ संकल्प ही इंजेक्शन का काम करते हैं। दृष्टि, वृत्ति को शुद्ध व पवित्र बनाकर जो भी संकल्प करें, वह सकारात्मक एवं शक्तिशाली होते हैं जिससे कार्य में सफलता मिलना तय हो जाता है। इसके अलावा जो भी संकल्प करें, वैसा स्वरूप बनने का भी अभ्यास करें। इससे हम आत्मभिमानि बन बहुत शक्तिवान हो जाएंगे। अशरीरी होकर आत्मिक स्थिति में रहकर दूसरों के लिए श्रेष्ठ संकल्प करें जिससे उनका जीवन भी निर्विघ्नकारी और मंगलकारी बन सके और मुख से यही बोल निकले 'पाना था सो पा लिया, और क्या अब बाकी रहा'...।

कैसे भरे संकल्पों में शक्ति? - सारे दिन में हमें द्वेरा विचार आते हैं जिनमें बहुत से नकारात्मक व कुछ सकारात्मक होते हैं। नकारात्मक विचारों/संकल्पों के बार-बार चलने से हमारे मन में आने वाली बातों की

कुम्हार तालाब से मिट्टी खोद कर लाता है। सुखाता है, उसे कूटता है, पीसता है व छानता है फिर उसमें पानी मिलाता है। तदोपरान्त रौंदता है, उसके बाद चाक पर रखकर घुमाता है। वो देवता, पशु, पक्षी, आदमी, जिसकी जैसी मूर्ति चाहता वैसी बनाता है। इसके अलावा वो मनचाहे बर्तन बनाता है। इतना सब कुछ सहन करने के बाद भी मिट्टी कुछ नहीं बोलती वो हमेशा कुम्हार की इच्छा को ही ऊपर रखती है। अपनी सहनशीलता के कारण ही वो एक सुन्दर आकृति में ढल जाती है। कलाकृति, कलाकार की श्रेष्ठ सोच का परिणाम है। अगर आपको लगता है कि कुम्हार या कलाकार जीत गया तो यह आपकी भूल है। जब भी कोई कलाकृति को देखेगा तो निःसंदेह वो कलाकार की महिमा करेगा। परन्तु आपको पता होना चाहिए अगर मिट्टी ना होती तो प्रकृति की रचना उभर कर सामने कैसे आती? इसलिए जीत की खुशी कलाकार को नहीं होनी चाहिए बल्कि जिसके कारण उसने जीत पायी उसकी महिमा करनी चाहिए और सारा श्रेय उसे देना चाहिए। अन्ततः मिट्टी की ही जीत होती है। जिसने मिट्टी जैसी सहनशीलता पा ली, मिट्टी जैसा नम्र हो गया, उसकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रह गया। सहनशीलता और धैर्य जीत के साथी हैं जबकि चोट मारने वाला हमेशा हारा है। लचक जीत है, कठोरता हमेशा टूटी है। एक व्यक्ति लोहार के पास गया। उसने देखा कि लोहार निहाई पर रखकर लोहे को हथौड़े से पीट रहा था। एक कोने में अनेकों हथौड़े टूटे पड़े थे। वह व्यक्ति बोला, निहाई तो एक ही है, हथौड़े कई टूटे हैं। लोहार ने बताया हथौड़े चोट करते हैं इसलिए टूटे हैं। निहाई चोट सहन करती है, उसके धैर्य व सहनशीलता के कारण उसका कुछ नहीं बिगड़ता है।

सहनशीलता

- ब्र.कु. दिलीप राजकुले, शांतिवन

आपदायें आती हैं तो वो हमारे पुरुषार्थ की परीक्षा है। वो हमेशा यह दर्शाती है कि आपका विश्वास अटल है या आप कहीं डगमग तो नहीं हो गये। सभी धर्म-स्थापकों और उनके सहायकों के सामने बहुत सारे विघ्न व समस्याएँ आयीं और उन्होंने उसका दृढ़ता से सामना भी किया। क्योंकि पवित्रता स्थापन करने वालों पर आपदायें आना मानों इस अद्भुत सृष्टि-लीला

ही इस गूढ़ तथ्य को जानकर अभी से अवस्था को दृढ़ करने और सहनशीलता के गुण की धारणा करने के अभ्यास पर ध्यान देना ही पुरुषार्थ का लक्ष्य होना चाहिए।

सहनशील व्यक्ति के मुख्य लक्षण

1. सहनशीलता के गुण को धारण करने वाले व्यक्ति के लक्षण ये हैं कि वह सन्तुष्ट दिखाई देगा। उनके नैन-चैन कभी भी असन्तुष्ट नहीं होंगे। जो सन्तुष्ट रहता है वही दूसरों को भी सन्तुष्ट कर सकता है। 2. जिस व्यक्ति में सहनशीलता होगी वह गम्भीर भी अवश्य होगा।

जो गम्भीर है वह किसी भी कर्म या परिस्थिति में घबरायेगा नहीं बल्कि हर बात की गहराई में जाकर सफलता का साधन सोचकर उपाय करेगा और सफलता को प्राप्त करेगा। 3. सहनशील व्यक्ति के कर्मों से ऐसा अनुभव होगा कि जैसे मानो कोई फरिश्ता इस धरती पर चल-फिर रहा है। 4. जो सहनशील होंगे वह मनन शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। वह अन्दर ही अन्दर मनन करेगा और जो मनन करता है वह मगन रहता है। 5. सहनशीलता के गुण की धारणा से ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, अहंकार इत्यादि विकार खत्म हो जाते हैं और अन्तर्मुखता, निर्माणता, अडोलता इत्यादि कई अन्य दिव्य गुण-मूर्त दिखाई देगा और वह हर्षित मुख और लोक-प्रिय बन जायेगा जिससे हर कर्म में सफलता उसके पाँव चूमेगी।

6. सहनशीलता का गुण धारण करने वाला व्यक्ति ही इस सृष्टि-लीला को एक नाटक- समझता हुआ साक्षी होकर कार्य कर सकता है और 'बीती को बीती' समझ कर सृष्टि-ड्रामा की ढाल को पकड़ सकता है।

सहनशीलता के गुण की गहराई में जाना ज़रूरी है क्योंकि इसकी धारणा से प्राप्त होने वाली शक्तियों के द्वारा मनुष्य का जीवन संवर जाता है, जिसमें स्वयं तथा समाज का कल्याण समाया हुआ होता है। जितना-जितना इस गुण की गहराई में जायेंगे उतना उसके मूल्य का पता पड़ेगा और जितना मूल्य का पता पड़ेगा उतना ही इस गुण को धारण करने का पुरुषार्थ करेंगे। पत्थर की मूर्ति भी पूजी तब जाती है जब वो पहले हथौड़े की चोट को झेलती है। अतः सहनशीलता द्वारा ही मनुष्य अपने मार्ग के अनेक कष्टों, विषमताओं, तूफानों, आलोचनाओं इत्यादि को पार करता हुआ अपने लक्ष्य पर पहुँचता है, जहाँ विजय-श्री उसका स्वागत करती है। इसलिए सहनशीलता के गुण को धारण करने-करवाने के लिए बीसों नाखूनों का ज़ोर लगा कर तत्पर हो जाना चाहिए।

समर में घाव खाता जो, उसी का मान होता है। छिपा उस वेदन में भी, मधुर वरदान होता है।

सृजन में झेलता जो चोट, छैनी और हथौड़ी की। वही पाषाण मन्दिर में, भगवान होता है। थकना नहीं, थमना नहीं, रूकना नहीं, झुकना नहीं! बस आगे ही बढ़ते जाना है।

क्योंकि पतझड़ के बाद बसन्त आना है।



ज्ञानमार्ग में मनुष्य जितना आगे कदम बढ़ाता है, परीक्षाएं भी अनायास ही उतना उग्र रूप धारण करके उसके सामने आती हैं। ज्ञानी का धर्म ही है हर्षित रहते हुए उन्हें सहन करते जाना। इस समय जो मनुष्य जितना सहन करता है, भविष्य में उसकी प्रालब्ध भी उतनी ऊंची होती है। जब विपरीत परिस्थितियाँ अथवा आपदायें आती हैं तो वो हमारे पुरुषार्थ की परीक्षा है। वो हमेशा यह दर्शाती है कि आपका विश्वास अटल है या आप कहीं डगमग तो नहीं हो गये।

हर व्यक्ति चाहता है कि उसे अपने जीवन के प्रत्येक कर्म में सफलता मिले। सफलता के लिए सहनशीलता का गुण धारण करना ज़रूरी है। सहनशीलता एक मुख्य दिव्य गुण है जिसकी धारणा से बिगड़े हुए कार्य भी बन जाते हैं और जिसके अभाव से बने हुए कार्य भी बिगड़ जाते हैं। सहनशीलता ज्ञानी का मुख्य गुण है, क्योंकि धर्म-स्थापना में अनेक प्रकार के विघ्न अथवा आपदायें तो आती ही हैं, परन्तु उनके होते हुए भी परमार्थ-पथ पर वह टिक सकेगा जिसमें सहनशीलता का मुख्य गुण होगा। योग का लक्ष्य ही निन्दा-स्तुति, मान-अपमान इत्यादि में समचित्त रहना है। अतः जिस पुरुषार्थी में सहनशीलता का गुण नहीं होगा उसकी अवस्था अडोल-चित्त, धैर्यवत् अर्थात् योगयुक्त नहीं रह सकती।

ज्ञान-मार्ग में मनुष्य जितना आगे कदम बढ़ाता है, परीक्षाएं भी अनायास ही उतना उग्र रूप धारण करके उसके सामने आती हैं। ज्ञानी का धर्म ही है हर्षित रहते हुए उन्हें सहन करते जाना। इस समय जो मनुष्य जितना सहन करता है, भविष्य में उसकी प्रालब्ध भी उतनी ऊंची होती है। जब विपरीत परिस्थितियाँ अथवा

का अनादि नियम है। इसलिये सृष्टि-लीला के इस रहस्ययुक्त नियम को जानकर घबराना नहीं चाहिये और हर्ष-शोक में नहीं आना चाहिये क्योंकि जितना-जितना कोई व्यक्ति इन परिस्थितियों को समचित्त होकर सहन करेगा उतनी-उतनी ही उसकी अवस्था परिपक्व होती जायेगी। जितनी अवस्था परिपक्व होगी, भविष्य में उसे स्वराज्य पद भी उतना ही शीघ्र प्राप्त होगा। आपदाओं, परिस्थितियों और प्रकृति के विघ्नों तथा बन्धनों को जीतने का यही तो फल है। जितना कोई व्यक्ति बड़ा ज्ञानी-योगी बनेगा, उसके मन के पुराने संस्कार और बाहरी विघ्न भी विकराल रूप धारण करके उसके सामने आते रहेंगे। परन्तु यदि सर्वशक्तिमान् परमात्मा के साथ उसका योग पूरा जुटा होगा तो उसको शक्ति भी पूरी मिलेगी। इस पुरुषार्थ के बाद तो प्रालब्ध काल में कभी कुछ सहन करना ही नहीं पड़ेगा, क्योंकि आखिर विजय हो जाने पर तो प्रकृति भी दासी हो ही जायेगी। इसलिये सहनशील होकर चलते चलो, वर्ना पुरुषार्थ-पथ पर अन्त तक चल न सकोगे, क्योंकि अन्त में तो मानो परीक्षाएँ और ही इकट्ठी होकर पूरे ज़ोर से वार करने आयेंगी। इसलिये पहले से



अहमदनगर। केन्द्रीय यातायात मंत्री नितिन गडकरी को गुलदस्ते द्वारा "भगवान धरती पर आ चुके हैं" का संदेश देते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी व ब्र.कु. दीपक।



मंडसौर। चैतन्य देवियों की झाँकी का दर्शन करते हुए एम.पी.ई.बी. के जिला अधीक्षक कमलेश लाड, ब्र.कु.समिता तथा अन्य।



शिकागो-यू.एस.ए.। सीनियर सिटीज़न सेंटर में "जीवन जीने की कला" विषय पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु. रोहित, वलसाड गुज.।



अलकापुरी-बड़ौदा। '7 अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए वडोदरा चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इन्डस्ट्रीज़ के प्रमुख निलेश शुक्ल, ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु.मीना, आई.ओ.बी. के चीफ मैनेजर केवल जी, ब्र.कु. नरेन्द्र एवं जी.एस.एफ.सी. के रिटायर्ड सीनियर मैनेजर नंदु जी।



फरीदाबाद। गीता बाल निकेतन सी.से. स्कूल में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. कौशल्या। साथ हैं प्रधानाचार्या रेणू सूद व अन्य टीचर्स।



झाँसी-हँसारी। 'परमात्म शक्ति द्वारा विश्व महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए राजीव कटियार, ए.आर.एन., आर.एस. चौधरी, (वित्त), विनोद सचान, केन्द्र प्रभारी बस डिपो, ब्र.कु. प्रतिभा, तथा ब्र.कु. रामकुमार।



वैर-भरतपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ है ब्र.कु. दिव्या।



सूरत-मजुरागेट। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी अनुव्रथ सभा की महिलाएँ ब्र.कु. सोनल को सम्मानित करते हुए।



राँची। रिजर्व बैंक राँची में '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ए.जी.एम. अमित सिन्हा, रामप्रकाश सिंघल तथा ब्र.कु. निर्मला।



उधमपुर-जम्मू व कश्मीर। डी.सी. ईशा मुदगल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता।



कुंडली-सोनीपत। टी.डी.आई. के डायरेक्टर रवि भाटिया के साथ ज्ञान चर्चा के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.पूजा एवं ब्र.कु. भूषण।



चित्तौड़गढ़-रावतभाटा। आदर्श विद्या मंदिर में आयोजित मातृ-सम्मेलन में माताओं को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मधु।



मूल रूप से एक शिक्षित परिवार से ताल्लुकात रखने वाले परेश विधानी जिनका जन्म भारत के पवित्र स्थल अजमेर (राजस्थान) में हुआ। उन्होंने भारत से पलायन करने के पश्चात् एक मुस्लिम देश सऊदी अरब (जेद्दा) में इलेक्ट्रॉनिक्स सामानों का आयात-निर्यात शुरू किया। आज वो अपने उस देश में प्रमुख व्यवसायी के रूप में उभरे हैं। इनका जीवन नियम और संयम से ओत-प्रोत रहा है। परिवार में पत्नी सहित दो बच्चे हैं। सभी स्वस्थ एवं सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम आपके सामने राजयोग के प्रयोग से सम्बन्धित उनके जीवन के कुछ विशेष अनुभव प्रस्तुत कर रहे हैं। इनसे हुई बातचीत के कुछ अंश आप सभी के सामने हैं।

प्रश्न:- आपका ब्रह्माकुमारी संस्था से परिचय कैसे हुआ?

उत्तर:- सन् 2011 में भारत में माउण्ट आबू स्थित ज्ञानसरोवर में बिज़नेस एण्ड इंडस्ट्रीज़ विंग की कॉन्फ्रेंस में अजमेर में रह रहे मेरे एक मित्र मनोहर महेश्वरी जी के साथ सपरिवार शरीक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ तीन दिनों में राजयोग का जो ज्ञान दिया गया उसका बहुत गहरा असर मेरे मानसपटल पर पड़ा। जीवन को श्रेष्ठ, आशावादी व तनावमुक्त कैसे बनायें इस विषय पर विस्तृत जानकारी मिली। साथ में अपने भाग्य को सातवें आसमान तक कैसे ले जायें इस पर भी सभी ने अपने वक्तव्य

धन कमाना हरेक व्यक्ति का सुनहरा सपना और जीवन का अंतिम लक्ष्य बन गया है। कोई वस्तुओं का उत्पादन और बिक्री करके तो कोई अपने श्रम को बेचकर धन कमाने की दौड़ में लगा हुआ है। प्रवर्तित श्रम द्वारा धन अर्जित करने के पीछे मनुष्य की सोच यही बन गई है कि धन से सुख की प्राप्ति और सुविधाओं का क्रय किया जा सकता है। इसीलिए आज मनुष्य कोई भी कीमत चुकाकर धन अर्जित करने को आतुर है। मनुष्य की इस भौतिकवादी सोच ने शहर को बाजार और मनुष्य को उपभोक्ता बना दिया है। मनुष्य की खुशी, मनोरंजन के साधन और सपने तक भी बिकने लगे हैं। संस्थाएँ, सरकारें और 5-6 फीट हाड़-माँस की काया में लिपटा हुआ इंसान धन के अर्जन, संग्रह और निवेश में इस सीमा तक लिप्त हो गया है कि वह जीवन के धर्म, कर्म और मर्म को भूल गया है। लगभग 90 के दशक में आर्थिक उदारीकरण का दौर प्रारम्भ होने के बाद तो धन कमाने की मची होड़ के बीच मनुष्य अपने जीवन के यथार्थ उद्देश्य, सामाजिक सरोकार और मानवीय मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से भटक गया है। लोगों की दीन, दुःखी और दरिद्रता की अवस्था और व्यवस्था को देखकर विश्व में अपने ढंग के अनोखे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व

शक्तिशाली प्रकम्पन से मैंने अपना जहान बदला....

अनुभव

दिये। मैं उन बातों से अति प्रभावित था। नवम्बर 2012 में भारत आगमन पर अजमेर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर 7 दिन का कोर्स किया। इसके उपरान्त जेद्दा सऊदी अरबिया में सेवाकेन्द्र नहीं होने की वजह से इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया के माध्यम से लगातार बहन शिवानी

के प्रवचन, मुरली तथा मेडिटेशन के कार्यक्रमों को सुनते तथा देखते रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि आज मेरा पूरा जीवन आध्यात्मिक ज्ञान से ओत-प्रोत है।

प्रश्न:- राजयोग के अभ्यास से आपको क्या फायदे हुए?

उत्तर :- राजयोग के नियमित अभ्यास से अपने आपको अत्यंत हल्का तथा आंतरिक रूप से शक्तिशाली महसूस करने लगा। पहले मैं ईगो में रहता था परन्तु राजयोग के अभ्यास से आत्मभान में रहने की अच्छी प्रैक्टिस हो गयी, जिसकी वजह से जिस किसी को मिलता या व्यवहार में आता उससे हमेशा मुझे सकारात्मक परिणाम मिलता।

प्रश्न:- माउण्ट आबू स्थित ब्रह्माकुमारीज के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय में आने के बाद क्या अनुभव हुआ?

उत्तर:- अगस्त 2013 में युगलों का राजयोग मेडिटेशन कैम्प जिसे भट्टी कहते हैं, में युगल के साथ आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहाँ के प्रवचन व राजयोग के अभ्यास से मन में अच्छी छाप पड़ी और अब मैं गृहस्थ जीवन में अपने आप को ट्रस्टी समझता हूँ। ऐसा महसूस होता है कि हर कार्य जैसे अपने आप सफल हो रहा है। मुख्यालय को देखकर मुझे लगा कि यहाँ से मेरा जन्म जन्म का रिश्ता है। यहाँ के शक्तिशाली प्रकम्पन मुझे फरिश्ता स्वरूप का अनुभव कराते हैं। यहाँ के बारे में सुनते ही मन सुख, शान्ति व असीम प्यार से भर जाता है।

प्रश्न:- रोजमर्रा के जीवन में व आपके अपने

व्यवसाय में आध्यात्मिकता का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर:- मैं तो यह समझता हूँ कि रोजमर्रा का जीवन तो बिना आध्यात्मिकता के अधूरा है। नियमित दिनचर्या में अपने शक्तिशाली प्रकम्पन द्वारा सामने वाले किसी भी इंसान के विचारों को पूर्णरूप से बदला जा सकता है। इसको मैं प्रैक्टिकल में अनुभव करता हूँ। इसका मेरे पास एक अनोखा व बहुत अच्छा उदाहरण है जो मैं पाठकों को बताना चाहूँगा। अनुभव इस प्रकार है कि मैंने एक व्यापारी को डेढ़ करोड़ रुपये लोन पर दिया था। समय उपरान्त उसने देने से मना कर दिया। उस समय मैं राजयोग का अभ्यास नहीं करता था। इसलिए मेरे स्वभाव में बहुत गुस्सा व चिड़चिड़ापन आ जाता था। गुस्से में आकर एक ऑफिशियल कलेक्टिंग कम्पनी को 20 प्रतिशत कमीशन लेकर सामने वाली पार्टी को डरा धमका के वसूली करने के लिए कह दिया था। वसूली कम्पनी भी पूरा प्रयास करने के बाद असफल हो गई। उस दरम्यान मैं राजयोग मार्ग पर चल पड़ा था। उस समय से मैं उस इंसान को दिल की दुआओं के साथ सकारात्मक प्रकम्पन देने लगा। इसका परिणाम मुझे सकारात्मक मिला। उसके घर में लड़की की शादी होने वाली थी, उस समय भी मैं लगातार सकारात्मक प्रकम्पन देता रहा। ई-मेल से मैसेजेज़ दिया करता था जिसका उसके विचारों पर प्रभाव पड़ा। धीरे धीरे बिना मांगे वो आधी रकम लौटा चुका है। शेष भी सौ प्रतिशत लौटा देगा ऐसा महसूस होता है। व्यवसाय में तथा व्यवहार में आते कहीं ना कहीं कुछ ऐसे विशेष अनुभव होते रहते हैं। मैं परमपिता परमात्मा का दिल से शुक्रिया करता हूँ कि उन्होंने मुझे अब गुस्सा नहीं परन्तु क्षमा करके विश्व में सकारात्मक प्रकम्पन देने की क्षमता दी है।

अरबपति

विद्यालय ने लोगों के वर्तमान और भविष्य के जीवन को धन से मालामाल कर अरबपति तो क्या पदमापदमपति बनाने के लिए 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का शुभारम्भ किया है। इस महायोजना के डायरेक्टर ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव का सभी निवेशकों से यह वायदा है कि इसमें किया गया सत्कर्मों का निवेश 100 प्रतिशत सुरक्षित है और लाभांश में अरबपति बनने की पूर्ण गारंटी है। विश्व में चलने वाली आर्थिक मंदी और प्राकृतिक आपदाओं तथा परिस्थितियों के उथल-पुथल होने के कारण पड़ने वाले दुष्परिणामों से यह योजना पूरी तरह सुरक्षित है। इसलिए सभी मनुष्य चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, उम्र, लिंग, भाषा, आर्थिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि से आते हैं, इस महायोजना में आसानी से निवेश कर सकते हैं। यह 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' एक सीमित अवधि के लिए है। जल्दी कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि आपका पड़ोसी 'आलस्य' और बार-बार धोखा देने वाला 'देह अभिमान चाचा' आपको इस महायोजना के बारे में उल्टी-सुल्टी बातें करके भ्रमित कर दें।

निवेश का अंतिम अवसर

यदि आपको सेवा के अवसरों से वंचित रहने की बार-बार शिकायत है या आप धन के अभाव में सेवा के अवसरों से वंचित हैं अथवा अनपढ़ हैं अथवा वृद्ध हैं तो भी आपके लिए अरबपति बनने का सुनहरा अंतिम अवसर है। इसमें आपको केवल समय और श्रम का निवेश करने में किसी भी प्रकार का शर्म और संकोच नहीं करना है। यदि आप अरबपति बनने का सपना देखा करते हैं तो एक जन्म क्या अनेक जन्म-जन्मान्तर के लिए सपनों को साकार करने का बिल्कुल यही वक्त है।

निवेश के प्रमुख विकल्प

महा अरबपति बनने की इस योजना में अनेक प्रकार के सुरक्षित निवेश के अवसर विकल्प के रूप में उपलब्ध हैं। आप अपने लिए अपनी आंतरिक मनोभावना के अनुसार किसी भी सत्कर्म के विकल्प का चयन करने के लिए स्वतंत्र हैं। बेहतर तो यह होगा कि आप पहले ही महा अरबपति बनने वाली सत्कर्म की इस योजना के लक्ष्य और परिणाम के प्रभाव को लोगों के समक्ष प्रभावशाली तरीके से रखें। सत्कर्मों के निवेश के प्रमुख विकल्प हैं- क्षमा, प्रेम, सहयोग, दया, शान्ति और सद्भावना के प्रकम्पन फैलाना, प्रकृति के प्रति दया, खुशी बांटना, विकलांगों की सहायता, - शेष पेज 7 पर...

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं हर परिस्थिति के प्रभाव से मुक्त रहने वाली संतुष्टमणि आत्मा हूँ।

संगमयुग पर सबसे बड़े से बड़ी स्थिति है संतुष्टता की। संतुष्ट आत्मा की स्थिति सदा प्रगतिशील रहती है। कोई भी परिस्थिति संतुष्ट आत्मा के ऊपर अपना प्रभाव डाल नहीं सकती, क्योंकि जहां संतुष्टता है वहां सर्व शक्तियां और सर्वगुण स्वतः ही आ जाते हैं। संतुष्ट आत्मा स्वयं-प्रिय, प्रभु-प्रिय और सर्व के प्रिय होती है। सदा संतुष्ट वही रह सकता है - जिसको सर्व प्राप्तियां हैं। परमात्मा बाप द्वारा सर्व शक्तियां, सर्वगुण, सर्व खजाने प्राप्त की हुई आत्मा सदा संतुष्ट रहती है।

योगाभ्यास - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ। मुझसे चारों ओर सर्व शक्तियों के वायब्रेण्ड्स फैल रहे हैं। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, सर्वशक्तिवान बाप से कम्बाइन्ड हूँ, सर्वशक्तिवान की शक्तिशाली किरणों निरंतर मुझ पर पड़ रही हैं और मैं सर्व शक्तियों से भरपूर हो रही हूँ।

बाबा के महावाक्य - मास्टर सर्वशक्तिवान

स्वमान - मैं बापदादा का वारिस बच्चा हूँ।

हर माँ-बाप की खाहिश होती है कि उनका बच्चा वारिस अर्थात् योग्य बने, उन्हीं के जैसा या उनसे भी बेहतर बने, ऐसा वारिस जो उनके कार्य को आगे बढ़ाये, उनके हर सपने को पूरा करे, समाज और संसार में उनका नाम रोशन करे, हमारे अलौकिक मात-पिता बापदादा भी हमसे ऐसी ही आशा रखते हैं ना...? क्या हम अपने मात-पिता की आशाओं को पूर्ण करने वाले वारिस बच्चे नहीं बनेंगे...?

योगाभ्यास - अ. वारिस वो जो एक के लव में लीन रहे - जिस मात-पिता ने हमें अलौकिक जन्म दिया, ज्ञान रत्नों से हमारा श्रृंगार किया, हमें जीवन जीना सिखाया, इतना योग्य बनाया, हमारे सारे दुःख दूर किये, अपना सब कुछ हम पर न्यौछावर कर दिया, ऐसे मात-पिता के लिए हम क्या न कर जाएं, स्वयं से ऐसी बातें करते हुए बाबा के प्यार में मग्न हो जायें...।

ब. वारिस वो जो छोटे बच्चे की तरह अपने सारे बोझ अपनी अलौकिक माँ को सौंपकर हल्का हो जाए...तो हम जो भी जिम्मेवारियों

वह है जो जिस समय, जिस शक्ति को आर्डर करे वह शक्ति हाज़िर हो जाए। ऐसे नहीं चाहिए सहनशक्ति और आ जावे सामना करने की शक्ति। तो शक्तियों को मास्टर सर्वशक्तिवान बन आर्डर करो और समय पर यूज करो।

धारणा - मन, वचन और कर्म में व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त रहना है। प्यारे बापदादा ने 15 दिन के लिए विशेष होमवर्क दिया है कि कुछ भी हो जाए... कैसी भी परिस्थिति सामने आ जाये लेकिन मन, वचन और कर्म में कम से कम 80 प्रतिशत मुक्त रहना है। संकल्प और स्वप्न में भी क्यों, क्या के प्रश्न न उठें। कितना भी हलचल हो लेकिन हमारी स्थिति अचल रहे। तो चेक करें कि कोई भी बात सामने आती है तो फुलस्टॉप लगता है या क्वेश्चन मार्क।

स्व-चेकिंग के लिए - सारा दिन संतुष्ट रहे और सर्व को संतुष्ट किया? संकल्प, वाणी और कर्म में व्यर्थ से कहां तक मुक्त रहे? त्रिकालदर्शी बन, तीनों काल को परख कर कर्म

का बोझ मैं-पन व मेरे-पन के कारण ढोकर चल रहे हैं, जिस स्वभाव, संस्कार, वस्तु वा व्यक्ति से परेशान हो रहे हैं, उस बोझ को बापदादा को सौंपकर हल्के रहने का अनुभव बढ़ाते चलें...।

स. वारिस वो जो मात-पिता की हर आज्ञा का पालन करे - वर्तमान आज्ञा है सेकण्ड में परमधाम में अपने अनादि स्वरूप ज्योति स्वरूप में स्थित हो जाएं, फिर सूक्ष्म वतन में अपने फरिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाएं। क्रोध मुक्त की गिफ्ट जो शिव बाबा को दे दी है उसे पुनः वापस लेकर यूज न करें।

धारणा - परिवार की भावना रखने वाला (फैमिली नेचर) - शिव भगवानुवाच - "वारिस बच्चा हर कार्य में चाहे मनसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में फैमिली नेचर वाला होगा। फैमिली का अर्थ होता है एक-दो को जानना और एक-दो को समझकर चलना। तो वारिस, परिवार में भी ठीक होगा और चारों निश्चय भी उसके प्रैक्टिकल लाइफ में होंगे।

किया? मास्टर सर्वशक्तिवान बन सर्वशक्तियों को आर्डर प्रमाण चलाया? हलचल में भी अचल रहे? फुलस्टॉप लगाया या क्वेश्चनमार्क?

चिंतन - मन, वचन और कर्म में व्यर्थ से कैसे मुक्त रहें? व्यर्थ का कारण और निवारण क्या है? व्यर्थ से नुकसान क्या है? व्यर्थ से मुक्त रहने वालों की निशानियां... और इससे... फायदे क्या हैं?

साधकों के प्रति - बापदादा कुछ समय से बार-बार इशारा दे रहे हैं कि पढ़ाई का रिज़ल्ट अचानक सामने आना है... इसलिए सदा एवररेडी। अभी समय है उड़ती कला में तीव्र पुरुषार्थ का... ऐसे नहीं कि चल रहे हैं...साधारण रीति से अपनी दिनचर्या व्यतीत करना अब वह कॉमन पुरुषार्थ का समय गया... इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं कि हर सेकण्ड और हर संकल्प को चेक करो और स्वयं को चेंज करो।

वह सारे परिवार का प्यारा होगा। कोई का प्यारा और कोई का नहीं, नहीं। "

चिन्तन - वारिस अर्थात् हर श्रीमत पर चलने वाला - संकल्प, बोल, कर्म, दृष्टि, वृत्ति, व्यवहार, तन, धन, जन, दिनचर्या आदि के लिए बापदादा ने क्या-क्या श्रीमत दी है? अलग-अलग निकालें। बाबा की साकार और अव्यक्त मुरलियों से श्रीमत की माला बनायें।

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! प्यारे बापदादा को वारिस बच्चों की आवश्यकता है जो उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में पूरी तरह उतारकर सारे संसार में उन्हें प्रत्यक्ष करें। बाबा का बनकर भी हम वारिस बच्चा न बन सकें तो शायद हम खुद ही खुद को माफ नहीं कर पायेंगे। जैसे बाबा ने कहा कि वारिस अर्थात् बाबा ने कहा और बच्चे ने किया। तो आओ हम सभी यह दृढ़ संकल्प करें कि बाबा आप जो भी कहेंगे, उसे मैं अवश्य पूर्ण करूंगा। आपका नम्बरवन वारिस बच्चा बनकर दिखाऊंगा।

अरबपति

- पेज 6 का शेष...

महिलाओं की सुरक्षा, स्वयं तथा विश्व के कल्याण के लिए ध्यानाभ्यास, व्यर्थ विचारों को समाप्त करना, दूसरों को प्रेरणा प्रदान करना। इसके अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति सत्कर्म के किसी अन्य विकल्प का चयन करना चाहता है तो उसके लिए भी विकल्प खुले हुए हैं।

प्रमुख उपभोक्ता

सत्कर्म के निवेश के सबसे सुरक्षित उपभोक्ता हम स्वयं ही हैं। सबसे पहले सत्कर्म के लिए ऊपर दिए गए विकल्पों में अपने इच्छानुसार सत्कर्म का चयन सुविधानुसार एक सप्ताह, मास अथवा वर्ष के लिए कर सकते हैं। चयनित किए गए सत्कर्म या सत्कर्मों को देहभान से मुक्त होकर जीवन में व्यावहारिक रूप से अपना आवश्यक है, तभी आपके महा अरबपति बनने की पूरी गारंटी है क्योंकि सत्कर्मों की पूंजी जमा करने का बैंक पूरे कल्प में केवल एक ही बार वर्तमान संगमयुग पर स्वयं निराकार ज्योतिर्बिन्दुस्वरूप परमात्मा शिव द्वारा स्थापित हुआ है। सत्कर्म के लिए उपभोक्ता के

रूप में अन्य विकल्प जैसे परिवार, मित्र, सहकर्मी, शैक्षिक संस्थाएँ, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा, धार्मिक संगठनों, औद्योगिक घराने, धरती माता इत्यादि हैं। सर्वप्रथम संस्थाओं में जाकर इस महायोजना के लक्ष्य और उद्देश्य के सम्बन्ध में प्रभावशाली प्रेरक सम्बोधन द्वारा लोगों के मन में सत्कर्म के प्रति प्रेरणा उत्पन्न कीजिए। आलस्य, उदास, निराश और अहंकारी मन से सत्कर्म का कारोबार करना असम्भव है। राजयोग के अभ्यास द्वारा मन को सशक्त बनाकर सत्कर्म का कारोबार करना सुरक्षित निवेश की विधि है।

सत्कर्म की महायोजना से लाभ

इस संसार के कल्याण, सद्भावना और सहयोग के प्रकम्पन द्वारा सुखमय जीवन जीने के लिए समर्पित यह महायोजना भौतिकता की अंधी दौड़ और अज्ञानता के अंधकार में भटक रही मानवता के लिए बेहतर जीवन की संकल्पना को साकार करने का एक अवसर है जिसमें हम और आप मिलकर समाज के सभी लोगों को सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करके स्वर्णिम

विश्व के नवनिर्माण की दिशा में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। यह वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित हो चुका है कि जब किसी स्थान में रहने वाली जनसंख्या के एक प्रतिशत लोग किसी एक विशेष संकल्प में स्थित होकर सामूहिक सोच के साथ कार्य करते हैं तो उस स्थान का वातावरण बदल जाता है। आप अपने गाँव, शहर, कार्यस्थल इत्यादि स्थानों पर इसी लक्ष्य को लेकर सत्कर्म करने के लिए लोगों को सामूहिक रूप से प्रेरित करके सकारात्मक वातावरण का नवनिर्माण करने के महापुण्य का वर्तमान में चान्स लेकर भविष्य में चान्सलर बन सकते हैं। नकारात्मक वातावरण के कारण सत्कर्म करने से वंचित आत्माओं को सत्कर्म की इस महायोजना से प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। आपका वर्तमान जीवन सुखमय, सुरक्षित और समृद्ध होगा। आपके जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के नये प्रवेश द्वार खुल जाएंगे। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी www.actsofgoodness.org पर उपलब्ध है।

-ब.कु.डॉ.हरीन्द्र, वाराणसी



किशनगढ़। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'शिव शक्ति भवन' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर केक काटते हुए दादी रतन मोहनी, ब्र.कु. शान्ता, किशनगढ़ की महारानी मिनाक्षी देवी तथा ब्र.कु. कमलेश।



वरनाला। 'स्टेस प्री लाईफ' के ऊपर एयर फोर्स के केन्द्रीय महाविद्यालय स्कूल में ट्रेनी टीचर्स के बीच में विचार रखते हुए 7 जिलों के ए.डी.सी. एस.आर. गुप्ता, ब्र.कु. बृज, ब्र.कु. सुदर्शन तथा विद्यालय के सकेट्री।



बड़ौदा। ग्लोबल हॉस्पिटल की 21वीं सालगिरह पर संबोधित करते हुए उपाध्यक्ष ब्र.कु. डॉ. सतीश। साथ है ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. भगवती, ब्र.कु. राज, प्रो. चन्द्रवदन व ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ.ओ.पी. अग्रवाल।



दिल्ली। सुदर्शन टीवी चैनल के अध्यक्ष सुरेश चव्हाणके को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अदिति।



वरेली-चौपला रोड(उ.प्र.)। 'आध्यात्मिकता द्वारा सुरक्षा' कार्यक्रम के बाद ए.डी.आर.एम. सोमेश श्रीवास्तव एवं वरिष्ठ मंडल परिचालक प्रबन्धक जवाहर राम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पार्वती।



आदर्शनगर-(उ.प्र.)। 'राजयोग द्वारा क्रोध निवारण एवं सकारात्मक चिन्तन से सफल व सुरक्षित यात्रा' कार्यक्रम के बाद ब्रह्माकुमारी बहनों को मोमेन्टो देकर सम्मानित करते हुए ए.आर.टी.ओ. संजय झा।